Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ

(सूरः अन्फ़ाल : 25)

अनुवाद : हे वे लोगों जो ईमान लाए हो अल्लाह और उसके रसूल की आवाज़ पर लब्बेक कहा करो जब वह तुम्हें बुलाए ताकि वह तुम्हें जीवित करे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 9
अंक 1-3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

05 रजब 1445 हिज्री कमरी, 18 सुलह 1403 हिज्री शम्सी, 4-18 जनवरी 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

यदि ख़ुदा की विशेष सहायता शामिल न होती और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जागृत बुद्धि मुस्लमानों को हर वक़त होशयार और चौकस न रखती और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दुश्मन की जमईयत को छापा मारने से पूर्व ही मुंतशिर कर देने की तदाबीर इख़तेयार न करते तो उन दिनों में मुस्लमानों की तबाही और बर्बादी में कोई संदेह नहीं था

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जन्नतुल्-बक़ी को मुस्लमानों के क़ब्रिस्तान के लिए चुन लिया तो उसके बाद से आज तक उसे एक अलग और विशेष हैसियत हासिल रही है जो सदैव रहेगी

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो बिन मज़उन पहले मुहाजिर थे जो मदीना में फ़ौत हुए

हज़रत उस्मान बिन मज़उन रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बहुत सदमा हुआ और रिवायत आती है कि वफ़ात के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके माथे पर बोसा दिया और उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आँखें भीगी हुई थीं

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बेटी हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात और हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु से हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा के निकाह और फिर उनकी वफ़ात का वर्णन

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात पर फ़रमाया यदि मेरी कोई तीसरी बेटी होती तो मैं उस की शादी भी उस्मान से करवा देता

ग़ज़व-ए-बनी ग़त्फ़ान, ग़ज़व-ए-बोहरान और सरिया बनू हारिसा समेत इस्लाम के इतिहास से सन् दो और तीन हिज्री के कुछ वाक़ियात का वर्णन

फिलिस्तीन के उत्पीड़ित लोगों के लिए दुआ की पुनः तहरीक

अधिकतर बड़ी हुकूमतें और सियास्तदान भी फिलिस्तीनियों की जानों को कोई महत्त्व नहीं दे रहे। उनके अपने लाभ हैं लेकिन बहरहाल उन लोगों को भी याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला भी एक वक़्त तक ढील देता है और केवल यही दुनिया नहीं, अगला जहान भी है हमें भी दुआओं की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए। अल्लाह तआला उत्पीड़ित फिलिस्तीनियों की न्याय करते हुए उन्हें इन ज़ुल्मों से निजात दिलवाए

श्रीमती मंसूरा बासमा साहिबा पत्नी हमीदुर्रहमान ख़ान साहब और श्रीमान चौधरी रशीद अहमद साहिब साबिक़ डिप्टी रजिस्ट्रार खेती यूनीव-र्सिटी फैसलाबाद की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 नवंबर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी के हवाले से बदर के फ़ौरी बाद वाक़ियात का मैं वर्णन कर रहा था। इस हवाले से दो हिज्री के अहम वाक़ियात में से एक मदीना के क़ब्रिस्तान जन्नतुल्-बक़ी का क़याम भी है। जन्नतुल्-बक़ी की बुनियाद और आरंभ के बारे में जो तफ़सील मिली है वह इस तरह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मदीना में वरूद के बाद वहां बहुत से क़ब्रिस्तान थे। यहूदियों के अपने क़ब्रिस्तान हुआ करते थे जबकि अरबों के विभिन्न क़बायल के अपने अपने क़ब्रिस्तान हुआ करते थे। मदीना तय्यबा चूँकि उस वक़्त विभिन्न इलाक़ों

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

में बटा हुआ था इसलिए हर क़बीला अपने ही इलाक़े में खुली जगह पर अपनी मय्यतों को दफ़ना देता था। क़बा का अलग क़ब्रिस्तान था जो ज़्यादा प्रसिद्ध था जबकि वहां छोटे-छोटे कई और क़ब्रिस्तान भी थे। क़बीला बनू ज़फ़र का अपना क़ब्रिस्तान था। बनू सल्मा का अपना अलग क़ब्रिस्तान था। अन्य क़ब्रिस्तानों में बनू साअदा का क़ब्रिस्तान था जिसकी जगह बाद में सोकुल्-न्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ायम हुआ। जिस जगह पर मस्जिदे नब्वी निर्माण हुई वहां भी ख़जूरों के झुण्ड में चंद मुशरेकीन की क़ब्रें थीं। इन समस्त क़ब्रिस्तानों में बक़ीउल ग्रकद सबसे पुराना और प्रसिद्ध क़ब्रिस्तान था और फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे मुस्लमानों के क़ब्रिस्तान के लिए निर्धारित कर लिया तो उसके बाद से आज तक उसे एक अलग और विशेष हैसियत हासिल रही है जो हमेशा रहेगी।

हज़रत अबैदुल्लाह बिन अबी राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी ऐसी जगह की तलाश में थे जहां केवल मुस्लमानों की क़ब्रें हों और इस उद्देश्य से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने विभिन्न जगहों को मुलाहिज़ा भी फ़रमाया। जाके देखा। यह फ़ख़र बक़ी-उल गरक़द के हिस्सा में लिखा था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे हुक्म हुआ है कि मैं इस जगह को अर्थात बक़ी-उल गरक़द को चुन लो। उसे इस दौर में बक़ी-उल खब्खबा भी कहा जाता था। इस में बेशुमार ग़र्कद के दरख़्त और जंगली झाड़ियाँ हुआ करती थीं। मच्छरों और अन्य ज़मीन के जानवरों की इस जगह पर भरमार थी और मच्छर जब इस जगह गंदगी की वजह से या जंगल की वजह से उड़ते थे तो ऐसा लगता था कि धुएं के बादल छा गए हैं। वहां सबसे पहले जिनको दफ़न किया गया वह हज़रत उस्मान बिन मज़उन रज़ियल्लाहु अन्हो थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी क़ब्र के सिरहाने एक पत्थर निशानी के तौर पर रख दिया और फ़रमाया यह हमारे पहले वाले हैं। उनके बाद जब भी किसी का देहांत होता तो लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछते कि उन्हें कहाँ दफ़न किया जाए? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते कि हमारे पहले वाले उस्मान बिन मज़उन के क़रीब बक़ीअ में दफ़न करो। बक़ीअ अरबी में ऐसी जगह को कहते हैं जहां दरख़्तों की संख्या अधिक हो। बहुत ज़्यादा दरख़्त हों। बहरहाल मदीना तय्यबा में इस मुक़ाम को बक़ी-उल गरक़द के नाम से जाना जाने लगा क्योंकि वहां ग़र्कद के दरख़्तों की अधिकता थी जैसा कि मैंने बताया। इसके इलावा वहां अन्य ख़ुद-रौ सहराई झाड़ियाँ भी बहुत ज़्यादा थीं। उसे जन्नतुल्--बक़ी भी कहा जाता है। जन्नत का लफ़्ज़ जो है इसका अरबी में एक अर्थ बाग़ या फ़िर्दोस के भी इसलिए यह जगह ज़्यादा-तर अजमी ज़ायरीन में जन्नतुल्-बक़ी के नाम से जानी जाती है।

अब्दुल हमीद कादरी साहिब हैं उन्होंने यह तफ़सील लिखी है। फिर कहते हैं कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अरब साधारणतः अपने मक़ाबिर और क़ब्रिस्तानों को जन्नत ही कह कर पुकारते हैं। इसका एक नाम मक़ाबिरुल बक़ीअ भी है जो अरबियों में ज़्यादा प्रसिद्ध है

(उद्धृत जुस्तजू-ए मदीना अज़ अब्दुल हमीद कादरी पृष्ठ 598 प्रकाशन ओरीएंटल पब्ली केशन्ज़् लाहौर पाकिस्तान 2007 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बारे में सीरत ख़ातिम नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में जो वर्णन किया है वह इस तरह है कि "इसी साल के आख़िर में" अर्थात दो हिज्री में "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए मदीना में एक मक़बरा तजवीज़ फ़रमाया जिसे जन्नतुल्-बक़ी कहते थे। इस के बाद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो साधारणतः इसी मक़बरा में दफ़न होते थे। सबसे पहले सहाबी जो इस मक़बरा में दफ़न हुए वह उस्मान बिन मज़उन रज़ियल्लाहु अन्हो थे। उस्मान बहुत आरंभिक मुस्लमानों में से थे और निहायत नेक और आबिद और सूफ़ी मुनश आदमी थे। मुस्लमान होने के बाद एक दफ़ा उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर! मुझे इजाज़त मर्हमत फ़रमाएं तो मैं चाहता हूँ कि बिल्कुल संसारिक वस्तुए त्याग कर और बीवी बच्चों से अलैहदगी इख़्तेयार करके अपनी ज़िंदगी विशेषता इबादत-ए--इलाही के लिए वक़्फ़ कर दूँ। परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस की इजाज़त नहीं दी। बल्कि जो लोग संसार त्यागा नहीं करते थे लेकिन रोज़ा और नमाज़ की इस क़दर कसरत करते थे कि इस से उन के परिजनों के हुक़ूक़ पर प्रबाव पड़ता था उनके मुताल्लिक़ भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हें चाहिए कि ख़ुदा का हक़ ख़ुदा को दो। बीवी बच्चों का हक़ बीवी बच्चों को दो। मेहमान का हक़ मेहमान को दो और अपने नफ़्स का हक़ नफ़्स को दो क्योंकि ये सब हुक़ूक़ ख़ुदा के निर्धरित किए हुए हैं और उनकी अदायगी इबादत में दाख़िल है।' इन हुक़ूक़ की अदायगी भी इबादत में दाख़िल है। "अल्-ग़र्ज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने उस्मान बिन मज़उन रज़ियल्लाहु अन्हो को संसार त्यागने की इजाज़त नहीं दी और इस्लाम में एकांत जीवन-यापन करने की हालत और संन्यास लेने को नाजायज़ क़रार देकर अपनी उम्मत के लिए प्राचुर्य और आलस्य और बेपरवाही के मध्य एक मध्य का मार्ग क़ायम कर दिया। उस्मान बिन मज़उन रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बहुत सदमा हुआ और रिवायत आती है कि वफ़ात के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी माथे पर बोसा दिया और इस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आँखें भीगी हूई थीं। उनके दफ़नाए जाने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने उनकी क़ब्र के सिरहाने एक पत्थर बतौर निशान के नसब करवा दिया और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कभी कभी जन्नतुल्-बक़ी में जाकर उनके लिए दुआ फ़रमाया करते थे।

उस्मान पहले मुहाजिर थे जो मदीना में फ़ौत हुए।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 462-463)

अब में ग़ज़व-ए-ज़ीअम्र या गज़व-ए-बनी ग़तफ़ान् का वर्णन भी करता हूँ। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह सूचना मौसूल हुई कि ग़त्फ़ान क़बीले की शाख़ बनू सालबा और बनु महारिब, ज़ी अम्र मक़ाम पर इकट्ठे हुए हैं। यह ग़त्फ़ान के इलाक़े में एक बस्ती है। उनका इरादा यह है कि रियासत-ए-मदीना के इर्द-गिर्द के इलाक़ों पर हमला करें। इन सबकी जत्था बंदी करने और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ भड़काने वाला बनू मुहारिब का एक शख़्स दोसूर बिन् हारिस था। यह ख़बर पाते ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को तैयारी करने का हुक्म दिया और साढ़े चार-सौ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का लश्कर लेकर मदीना से रवाना हुए। उनके पास चंद घोड़े भी थे और मदीना में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फान रज़ियल्लाहु अन्हो को अपना क़ायमक़ाम निर्धारित फ़रमाया।

(अल्सीरतुल हल् बिया भाग 2 पृष्ठ 290 दारुल कुतुब इल्मिया)

(सबलुल् हुदा वल्रिशाद भाग 4 पृष्ठ 176 दारुल कुतुब इल्मिया)

माह रबी-उल् अव्वल तीन हिज्री में ग़ज़व-ए-ग़त्फ़ान पेश आया। बारह रबी-उल् अव्वल को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस ग़ज़वा के लिए रवाना हुए। ग्यारह दिन अहल-ए-मदीना को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जुदाई बर्दाश्त करनी पड़ी जिसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चौबीस रबी-उल् अव्वल को वापस मदीना तशरीफ़ ले आए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़त्फ़ान की सरकूबी के लिए ग़त्फ़ान के हाँ जिस जगह पड़ाव किया उसका नाम ज़ी-अमर था। इसी वजह से इस ग़ज़वा को ग़ज़व-ए-ज़ी-अमर और ग़त्फ़ान क़बीले की बिना पर उसे ग़ज़व-ए-बनू ग़त्फ़ान भी कहा जाता है।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 290 दारुल कुतुब इल्मिया)

(उद्धृत दायरा मारिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 367-368 मकतबा दारुल मारूफ़, लाहौर

मुशरेकीन की जत्था बंदी के ख़िलाफ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रवानगी की तफ़सील में यूं लिखा है कि मदीना से रवाना होने के बाद सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो को ज़ुल् किस्सा के स्थान पर बनू सालबा का एक शख़्स मिला। ज़ुल् किस्सा रबाज़ह के रास्ते पर मदीना से चौबीस मील की दूरी पर था। उस शख़्स का नाम जब्बार था। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे गिरफ़्तार कर लिया और उसे पूछा कि कहाँ का इरादा है। उसने कहा यसरब जाना चाहता हूँ और अपने रोज़गार की तलाश के लिए जा रहा हूँ तो उसको नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लाया गया। उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी क़ौम के हालात से आगाह किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे इस्लाम की दावत दी तो वह तुरंत मुस्लमान हो गया। जब उसे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरादे का इलम हो हुआ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बनु सालबा और बनु महारिब पर चढ़ाई के लिए निकले हैं तो उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में निवेदन किया कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वे हरगिज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सामना नहीं करेंगे। यदि उन्हें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आमद के बारे में पता चल गया तो वे भाग कर पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ जाऐंगे। मदीना के इर्द-गिर्द तो बेशक हमला करना चाहते थे लेकिन सामना नहीं करेंगे मुस्लमानों का। और कहा कि मैं भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ चलता हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब्बार को बिलाल के सपुर्द कर दिया। वह शख़्स मुस्लमानों को एक

दूसरे रास्ते से लेकर चला और उनके इलाक़े में ले आया। वहां मौजूद लोगों ने जब इस्लामी लश्कर आते देखा तो वे सब निकल भागे और पहाड़ों पर जा चढ़े। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पेशक़दमी करते हुए ज़ी-अमर नामी स्रोत पर पहुंचे। वहां पड़ाव डाला। अचानक वहां बहुत तेज़ बारिश शुरू हो गई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो के कपड़े भीग गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने गीले कपड़े सूखने के लिए दरख़्त पर डाल दिए और ख़ुद इस दरख़्त के नीचे लेट गए। दूसरे सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो अपने अपने कामों में व्यस्त थे। यहीं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को शहीद करने की नापाक कोशिश की गई थी। इस बारे में लिखा है जो तलवार सौंतने वाले शख़्स की घटना आती है। ये लोग जो पहाड़ों की चोटियों में छिप गए थे वे ऊपर से पहाड़ों पर से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सारी नक़ल-ओ-हरकत देख रहे थे। मुशरिकों ने जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को एक जगह तन्हा लेटे हुए देखा तो वे अपने सरदार दोअसूर के पास आए। यह शख़्स उनमें सबसे ज़्यादा बहादुर था। मुशरिकों ने उसे कहा कि इस वक़्त मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिल्कुल अकेले लेटे हुए हैं। अब ये तुम्हारा काम है कि उनसे निमट लो। एक रिवायत में यूं है कि ख़ुद दोअसूर जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वहां तन्हा लेटे हुए देखा तो उसने कहा कि यदि इस वक़्त भी मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम) को क़तल न करूँ तो अल्लाह ख़ुद मुझे हलाक कर दे। बहरहाल यह कह कर दोअसूर तलवार सोंतते हुए चला और बिल्कुल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिरहाने पहुंच कर रुका। फिर अचानक उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को संबोधित कर के कहा। आज, या यह कहा कि अब आप को मेरे हाथ से कौन बचा सकता है? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने संतोष के साथ फ़रमाया : अल्लाह मुझे तुमसे बचाएगा।

इस पर वह् ज़मीन पर गिर गया और तलवार उसके हाथ से गिर गई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़ौरन उसकी तलवार उठा ली और उसे फ़रमाया अब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा? इस पर दोअसूर ने कहा لَا أَحَدٌ، وَأَنَا أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ، وَاللّٰهِ لَا أُكَثِّرُ عَلَيْكَ جَمْعًا أَبَدًا कोई भी नहीं। मुझे तो अब कोई नहीं बचा सकता और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई उपासना के योग्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूलुल्लाह हैं। अल्लाह की क़सम! भविष्य में मैं कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ लोगों की जत्था बंदी नहीं करूँगा। यह उसने अह्द किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी तलवार उसी को इनायत फ़र्मा दी और एक रिवायत में है कि दोअसूर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ मुतवज्जा हो कर अर्ज़ करने लगा। अल्लाह की क़सम! आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एहसान करने के मुआमले में मुझ से बेहतर हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उत्तर में फ़रमाया कि أَنَا أَحَقُّ بِذٰلِكَ مِنْكَ मैं तुमसे इस बात का ज़्यादा हक़दार हूँ कि एहसान करूँ और दोअसूर अपनी क़ौम की तरफ़ लौट आया लेकिन उसका हाल ही बदला हुआ था और वह अपनी क़ौम को तब्लीग़ कर रहा था। दोअसूर ने वाक़िया वर्णन किया कि मेरे साथ क्या हुआ था, किस तरह मैं गिर गया। वह गिरने के वाक़िया को इस तरह वर्णन करता है कि कहता है कि मैंने वहां एक लंबे क़द के आदमी को देखा। जब मैं वहां तलवार सौंत के खड़ा था तो मैंने देखा एक बहुत लंबे क़द वाला आदमी वहां आया है। उसने मेरे सीने को धक्का दिया तो मैं पीठ के बल गिर गया, हाथ मारा उसने तो मैं पीठ के बल गिर गया। तब मैंने जान लिया कि यह कोई इन्सान नहीं है, यह तो कोई फ़रिश्ता है। इसलिए मैंने उसी वक़्त इक़रार कर लिया कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूलुल्लाह हैं। कहता है अल्लाह की क़सम मैं उनके ख़िलाफ़ कभी कोई जुंबिश नहीं करूँगा। इसके बाद वह अपनी क़ौम को इस्लाम की दावत देने लगे। अल्लाह तआला ने उनके ज़रीया से बहुत से लोगों को हिदायत अता फ़रमाई। बहरहाल उसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना वापस तशरीफ़ ले आए और कहीं कोई मुक़ाबला नहीं हुआ। इस ग़ज़वा के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकल ग्यारह दिन मदीना से बाहर रहे और एक क़ौल के अनुसार पंद्रह दिन मदीना से बाहर रहे और अबू उमर कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नजद में सिफ़र का पूरा महीना रहे। बहरहाल यह विभिन्न रिवायतें हैं लेकिन यह चंद दिन का ही था।

कुछ उल्मा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर तलवार सौंतने का ऊपर वर्णन किया हुआ वाक़िया जो है आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जो क़ातिलाना हमला था, इसको ग़ज़व-ए-ज़ातुल् रिकाअ का वाक़िया क़रार दिया है और उसे एक ही वाक़िया तस्लीम किया है लेकिन अक्सर शोधकर्ताओं ने कहा है कि ये दोनों वाक़ियात दो अलग-अलग ग़ज़वात के हैं। ग़ज़व-ए-ज़ातुल् रिकाअ के अवसर पर हमला करने वाले शख़्स का नाम ग़ौरस भी वर्णन हो रहा है और इसके बारे में यह भी कहा जाता है कि उसने इस्लाम क़बूल कर लिया था और यह भी है कि इस्लाम क़बूल नहीं किया था। जबकि उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह अह्द किया था कि आइन्दा कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुक़ाबिल पर नहीं आएगा। बुख़ारी की भी यह रिवयत है।

(उद्धृत अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 290 दारुल कुतुब इल्मिया)
(सबलुल् हुदा वल्रिशाद भाग 4 पृष्ठ 176 दारुल कुतुब इल्मिया)
(सीरत इन्साईक्लो पीडीया भाग 6 पृष्ठ 71 मकतबा दारुल मारूफ़)
(शरह अल् ज़रक़ानी भाग 2 पृष्ठ 381-382 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)
(सही अल् बुख़ारी किताब अल्मग़ाज़ी बाब ग़ज़व उल् रिकाअ हदीस 4136)

इस अरसा के वाक़ियात में एक वाक़िया यह भी है कि हज़रत रुकय्या रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात हुई और हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी हुई जिसकी तफ़सील इस प्रकार है जो अब्दुल्लाह बिन मुकन्निफ़ बिन हरिसा अंसारी ने वर्णन की है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ज़व-ए-बदर के लिए रवाना हुए तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को अपनी बेटी हज़रत रुकय्या रज़ियल्लाहु अन्हा के पास छोड़ा। वह बीमार थीं और उन्होंने इस रोज़ वफ़ात पाई जिस दिन हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना की तरफ़ फ़तह की ख़ुशख़बरी लेकर आए जो अल्लाह तआला ने बदर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अता फ़रमाई थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए बदर के माल-ए-ग़नीमत में हिस्सा निर्धारित फ़रमाया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का हिस्सा जंग-ए-बदर में शामिल होने वालों के बराबर था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत रुकय्या रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद हज़रत उस्मान बिन अफ़्फान रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ अपनी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी दी।

(अल् तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद, भाग 3, पृष्ठ 41 वर्णन इस्लाम उस्मान बिन अफ़्फान, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से मस्जिद के दरवाज़े पर मिले और फ़रमाने लगे कि उस्मान यह जिबरईल हैं उन्होंने मुझे ख़बर दी है कि अल्लाह तआला ने उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह रुकय्या रज़ियल्लाहु अन्हा जितने हक़ महर पर और उससे तुम्हारे हुस्न-ए-सुलूक पर तुम्हारे साथ कर दिया है। (सुंन इब्ने माजा इफ़्तिताह अल्-किताब फ़ज़ल उस्मान रज़ी अलल्लाआ अन्ना हदीस नंबर 110) वही जो रुक़य्या का हक़ महर था उसी पर तुम्हारे साथ निकाह कर दिया है। अर्थात दूसरी बेटी का निकाह भी अल्लाह तआला ने कहा कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से कर दिया जाए।

हज़रत आयश रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन फ़रमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उम्मे अयमन रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया : मेरी बेटी उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा को तैयार करके उस्मान के हाँ छोड़ आओ और इसके सामने दफ़ बजाओ। इसलिए उन्होंने ऐसा किया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तीन दिन के बाद हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया हे मेरी प्यारी बेटी तुमने अपने पति को कैसा पाया? उम्मे कुलसूम ने अर्ज़ किया वह बेहतरीन पति हैं

(सीरत अमीरुल मोमेनीन उस्मान बिन अफ़्फ़ान शख़्सीयत व असरा अज़ अली अल् सलाबी, पृष्ठ 41 अल् फ़सल/المبحث الثالث: ملازمته للنبی ﷺ فی المدینة وفاة ام کلثوم, दारुल मारूफ़ 2006 ई.)

हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के हाँ नौ हिज्री तक रहीं। इसके बाद वह बीमार हो कर वफ़ात पा गएं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और उनकी क़ब्र के पास बैठे। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा की क़ब्र के पास इस हाल में बैठे हुए देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँखें आँसू बाहा रही थीं।

(सीरत अमीरुल मोमेनीन उस्मान बिन अफ़्फ़ान शख़्सीयत व असरा अज़ अली अल् सलाबी, पृष्ठ 41 अल् फ़सल/المبحث الثالث: ملازمته للنبی ﷺ فی المدینة وفاة ام کلثوم, दारुल मारूफ़ 2006 ई.)

बुख़ारी की एक रिवायत में इस वाक़िया का इस प्रकार हुआ है कि हिलाल ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाह तआला अन्ना से रिवायत की है, वह कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेटी के जनाज़े पर मौजूद थे। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ब्र के पास बैठे हुए थे तो मैंने देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आँखें आँसू बहा रही थीं।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् जनायज़ बाब من يدخل قبر المرأة हदीस नंबर1342)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात पर फ़रमाया यदि मेरी कोई तीसरी बेटी होती तो मैं उसकी शादी भी उस्मान से करवा देता।

(अल् तबकातुल् कुबरा ले इब्ने साद, भाग तृतीय पृष्ठ 41 उस्मान बिन अफ़्फ़ान, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत इब्ने अब्बास वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक जगह से गुज़रे तो देखा कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो वहां बैठे थे और हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा बिंत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के ग़म में रौ रहे थे। रावी कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दोनों साथी अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा : हे उस्मान तुम किस वजह से रौ रहे हो? हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हे अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं इस वजह से रौ रहा हूँ कि मेरा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से दामादी का ताल्लुक़ ख़त्म हो गया है। दोनों लड़कियां मेरे से ब्याही गईं, दोनों फ़ौत हो गईं। अब दामादी का ताल्लुक़ ख़त्म हो गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मत रौ।

कसम है उस ज़ात की जिस के क़बज़ा क़ुदरत में मेरी जान है कि यदि मेरी सौ बेटियां होतीं और एक-एक करके फ़ौत हो जातीं तो मैं हर एक के बाद दूसरी को तुझ से ब्याह देता यहां तक कि सौ में से एक भी बाक़ी न रहती।

(कंज़ुल अम्माल भाग 13 पृष्ठ 21 किताब अल् फ़ज़ायल, फ़ज़ायल अल् सहाबा, फ़ज़ायल ज़ू नूरैन उस्मान बिन अफ़्फ़ान हदीस नंबर 36201 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

बहरहाल यह एक मुहब्बत का और ताल्लुक़ का इज़हार था जो दोनों तरफ़ से हुआ। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को इस बात का ग़म कि अब दामादी का रिश्ता ख़त्म हो गया है लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कमाल दिलजोई फ़रमाते हुए यह यक़ीन देहानी फ़रमाई कि यह ताल्लुक़ तो क़ायम है, तुम इस बात पर परेशान न हो।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस शादी का वर्णन सीरत ख़ातिम नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में यूं फ़रमाया है कि "रुक़य्या बिंत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पत्नी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो बिन अफ़्फ़ान की वफ़ात के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी दूसरी लड़की उम्मे कुल्सूम की शादी जो हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हो से बड़ी परंतु रुक़य्या से छोटी थीं, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से कर दी। इसी वजह से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को 'ज़ू नूरैन' दो नूरों वाला कहते हैं। उम्मे कुलसूम की यह दूसरी शादी थी क्योंकि वह और उनकी बहन रुक़य्या शुरू में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चचा अबू लहब के दो लड़कों से ब्याही गई थीं परंतु पूर्व इसके कि उनका रुख़स्ताना होता मज़हबी मुख़ालेफ़त की बिना पर यह रिश्ता मुनक़ते हो गया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहले हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से रुक़य्या रज़ियल्लाहु अन्हो की शादी की और रुक़य्या की वफ़ात के बाद उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी कर दी परंतु अफ़सोस है कि इन दोनों साहबज़ादियों की नसल का सिलसिला नहीं चला क्योंकि उम्मे कुलसूम के तो कोई बचा हुआ ही नहीं और रुक़य्या का साहिबज़ादा अब्दुल्लाह छः साल का हो कर वफ़ात पा गया। उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह रबी उलअव्वल तीन हिज्री में हुआ था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 463 – 464)

इस अरसा के वाक़ियात में ग़ज़व-ए-बहरान का भी वर्णन है। इसको ग़ज़वा बहरान के इलावा ग़ज़व-ए-फ़ुरुआ ग़ज़व-ए-बनू सालमा भी कहा जाता है। बोहरान वादी फ़ुरुआ के नवाह में अहल-ए-हिजाज़ की एक खनिज पदार्थ की कान है और वादी फ़ुरुआ मदीना से छयानवे मील की दूरी पर स्थित है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह सूचना मौसूल हुई कि बनू सलीम की भारी संख्या बोहरान में जमा है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अब्दुल्लाह बिन इब्ने मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हो को मदीना में अपना नायब निर्धारित फ़र्मा कर जबकि एक और रिवायत के अनुसार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को अपना नायब निर्धारित फ़र्मा कर तीन सौ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का लश्कर लेकर बोहरान की तरफ़ निकले जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निकलने की वजह ज़ाहिर नहीं की और जब इस्लामी लश्कर बोहरान से एक रात के फ़ासले पर पहुंचा तो वहां उन्हें बनू सलीम का एक आदमी मिला। उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बताया कि वे लोग मुंतशिर हो गए हैं। अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस शख़्स को एक सहाबी के सपुर्द कर दिया और आगे रवाना हो गए यहां तक कि बोहरान पहुंच गए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वहां किसी को न पाया क्योंकि सब अपने अपने पानी के मुक़ामात की तरफ़ मुंतशिर हो चुके थे। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वापिस लौट गए और जंग की कोई नौबत न आई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस ग़ज़वा के लिए छः जमादी ऊला को मदीना से निकले और दस रातें बाहर रहने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सोला जमादीउल उला को वापस तशरीफ़ ले आए। इसके विपरीत इब्न-ए-इसहाक़ ने यह वर्णन किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ुरैश के तिजारती क़ाफ़िले को रोकना चाहते थे यहां तक कि आप बोहरान पहुंच गए जो हिजाज़ में वादई फुरा के नवाह में एकक ा न है। अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने वहां रबी उल आखिर और जमादीउल उला के दो महीने क़ियाम फ़रमाया। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वापस मदीना तशरीफ़ ले आए। इस दौरान किसी लड़ाई की नौबत नहीं आई।

(उद्धृत शरह अल् ज़रक़ानी आला मवाहेबुल् दुनिया भाग 2 पृष्ठ 382-383 दारुल कुतुब इल्मिया 1996 ई.)

(सीरत इब्ने हशाम पृष्ठ 513 दारुल कुतुब इल्मिया 2001 ई.)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 226 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़ज़व-ए-बोहरान की तफ़सील इस तरह वर्णन की है कि "अभी ग़ज़व-ए-ज़ी उमर पर ज़्यादा अरसा नहीं गुज़रा था अर्थात अवाख़िर रबीउल अव्वल तीन हिज्री में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को वहशत-नाक इत्तिला मौसूल हुई कि बनू सुलेम फिर स्थान बोहरान में मदीना पर अचानक हमला करने की ग़रज़ से बहुत बड़ी संख्या में जमा हो रहे हैं और यह कि उनके साथ क़ुरैश का भी एक जत्था है। नाचार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फिर सहाबा की एक जमात को साथ लेकर मदीना से निकले, लेकिन हसब-ए-आदत अरब के ये वहशी दरिंदे जो अपने शिकार पर अचानक और ग़फ़लत की हालत में हमला करने का मौक़ा चाहते थे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आमद आमद की ख़बर पा कर इधर उधर मुंतशिर हो गए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कुछ अरसा वहां क़ियाम करके वापस तशरीफ़ ले आए।

बनूसलीम और बनु ग़त्फ़ान का इस तरह बार-बार मदीना पर हमला करने के इरादे से जमा होना साफ़ ज़ाहिर कर रहा है कि सहराए अरब के ये वहशी और जंगजू क़बायल इस्लाम के सख़्त-जानी दुश्मन थे और दिन रात उस फ़िक्र में रहते थे कि कोई मौक़ा मिले तो मुस्लमानों को तबाह और बर्बाद कर दें। ज़रा मुस्लमानों की इस वक़्त की नाज़ुक हालत का अंदाज़ा लगाओ कि उन पर इस ज़माना में कैसे दिन गुज़र रहे थे। एक तरफ़ मक्का के क़ुरैश थे जिनको इस्लाम की अदावत और जंग-ए-बदर के इंतेक़ामी रूह ने अंधा कर रखा था और उन्हों ने ख़ाना काअबा के पर्दों के साथ लिपट लिपट कर कसमें खाई हुई थीं कि जब तक मुस्लमानों को मालिया-मेट न कर लेंगे चैन नहीं लेंगे। दूसरी तरफ़ सहराए अरब के ये ख़ूँख़ार दरिंदे थे जिनको क़ुरैश की अंगेख़्त और इस्लाम की दुश्मनी ने मुस्लमानों के ख़ून की प्यास से बेचैन कर रखा था। इसलिए देखो कि बदर के बाद चंद माह के अंदर अंदर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमको कितनी दफ़ा बज़ात-ए-ख़ुद उन वहशी क़बायल अरब के ख़ूनी इरादों से अपने आपको महफ़ूज़ करने के लिए सफ़र करना पड़ा। जैसा कि सर विलियम मियूर ने व्याख्या की है। ये दिन भी बहुत सख़्त गरमियों के दिन थे और गर्मी भी अरब के सहरा की थी।

यदि ख़ुदा की विशेष सहायता शामिल न होती और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जागृत बुद्धि मुस्लमानों को हर वक़त होशयार और चौकस न रखती और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दुश्मन की जमईयत को छापा मारने से क़बल ही मुंतशिर कर देने की तदाबीर इख़तेयार न करते उन दिनों में मुस्लमानों की तबाही वबर्बादी में कोई संदेह नहीं था।

और यह सिर्फ़ बैरूनी ख़तरात थे। बाक़ी अंदरूनी ख़तरात भी किसी तरह कम न थे। ख़ुद मदीना के अंदर मुस्लमानों से मिले जुले रहने वाले मुनाफ़ेक़ीन मौजूद थे जिनको आसतीन का सांप कहना यक़ीनन कोई मुबालग़ा नहीं है। उनके इलावा ग़द्दार और ख़ुफ़ीया साज़िशों के आदी यहूदी लोग थे जिनकी अदावत की गहराई और वुसअत इंतेहा को पहुंची हुई थी। अल्लाह अल्लाह इन आरंभिक मुस्लमानों के लिए यह कैसी मुसीबत के दिन थे! ख़ुद उनकी ज़बान से सुनिए। उबै बिन काब रिवायत

करते हैं इस ज़माना में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का यह हाल था कि वह डर के मारे रातों को हथियार लगा लगा कर सोते थे और दिन को भी हर वक़त मुसल्लह रहते थे कि कहीं उन पर कोई अचानक हमला न हो जावे और वो एक दूसरे से कहा करते थे कि देखिए हम उस वक़्त तक ज़िंदा भी रहते हैं या नहीं कि जब हम अमन वातमीनान की ज़िंदगी गुज़ारेंगे और ख़ुदा के सिवा हमें किसी का डर नहीं होगा।

इन अलफ़ाज़ मैं किस मुसीबत और किस बे कसी का इज़हार है और अमन और इतमेनान की ज़िंदगी की कितनी तड़प मख़फ़ी है। इस का अंदाज़ा हर इन्साफ़ पसंद शख़्स ख़ुद कर सकता है।"(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 464 – 465) और यही आजकल भी बाअज़ जगह के हालात हैं और खासतौर पर फिलिस्तीनियों के भी

एक सरिया ज़ैद बिन हारिसा था जिसकी तफ़सील में यह लिखा है कि बनू सुलेम की पसपाई बनू क़ेनुक़ा के देश निकाला, ग़ज़व-ए-सवेक् में अबू सुफ़ियान का भाग जाना और ग़ज़वा बनू ग़त्फ़ान बनू सअ बनू मुहारिब की पसपाई, ये अस्करी तग-ओ--ताज़ अर्थात फ़ौजी बरतरी मदीना की उभरती हुई क़ुव्वत पर दलालत कर रही थी। सबसे बढ़कर ग़ज़व-ए-बदर में अहल-ए-ईमान की कामयाबी और मुशरेकीन की ज़िल्लत आमेज़ शिकस्त की बिना पर आदाए इस्लाम इक़तेसादी मुश्किलात-ओ--मसाइब से बहुत परेशान हुए क्योंकि मक्का से शाम जाने वाली मारूफ़ शाहराह का गुज़र मदीना के मग़रिब में बहीर-ए-अह्मर के साथ साथ था। अबूसुफ़ियान के तिजारती क़ाफ़िले को मुस्लमानों ने इसी रास्ते पर रोकने की कोशिश की थी। मदीना के आस-पास के क़बायल भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुसालहत कर चुके थे। इसलिए मुशरेकीन-ए-मक्का इस रास्ते को तिजारत के लिए इख़तेयार करने को किसी तरह भी तैयार नहीं थे। अहल-ए-इस्लाम की तरफ़ से मुशरेकीन की मआशी नाका बंदी की वजह से वे लोग इंतेहाई परेशान हुए और शाम के मारूफ़ रास्ते को छोड़कर नए रास्ते की तलाश में रहने लगे। एक रोज़ सफ़ बिन उमय्यह कुफ़्फ़ार--ए-मक्का से कहने लगा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस के साथियों ने हमारा जीना दुशवार कर दिया है। हमारे तिजारती मर्कज़ तक जाने से हमें रोक दिया है। अब हमें कुछ समझ नहीं आ रही कि हम क्या करें। वे तो साहिल समुंद्र से पीछे हटने का नाम तक नहीं लेते। साहिल के अक्सर रिहायश पज़ीर क़बाइल ने भी उनसे मुसालहत और समझौता कर लिया है और वे उनके साथ मिल गए हैं। अब हम जाएं तो किस तरफ़ और करें तो क्या करें। यहीं मक्का में रहे तो हम अपना जमा पूंजी भी खा जाऐंगे। जो कुछ हमारे पास है सब खा जाऐंगे। इसके बाद हमारे पास कुछ नहीं बचेगा जिसके सहारे हम ज़िंदगी गुज़ार सकें। यही माल गर्मी में हम शाम और सर्दी में हब्शा की तरफ़ तिजारत की ग़रज़ से ले जाया करते थे। अब क्या होगा? सफ़ बिन अमय की यह बात सुन कर सब परेशान थे। अस्वद बिन मुत्तलिब ने मश्वरा दिया कि साहिल-ए-समुंद्र का रास्ता छोड़ कर इराक़ की तरफ़ से शाम जाया जा सकता है। सफ़वान ने कहा मुझे तो इस रास्ते का बिल्कुल इलम नहीं। अबू ज़मा ने कहा कि मैं तुझे एक ऐसे रहबर के मुताल्लिक़ बताता हूँ जिसे इस रास्ते की मुकम्मल पहचान है। उसने बताया कि वह फ़ुरात बिन हययान इजली है। वह इस रास्ते से आता जाता रहता है और उसे इस गुज़रगाह से मुकम्मल शनासाई है। सफ़वान ने अल्लाह की क़सम खा कर कहा कि बहुत ख़ूब। मैं तो यही चाह रहा था। फ़ुरात को बुलवाया गया। उस के आने पर सफ़वान ने उसे कहा कि मैं क़ाफ़िला तिजारत लेकर शाम जाना चाहता हूँ। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारी तिजारत के हवाले से हमें परेशान कर रखा है क्योंकि हमारे क़ाफ़िले उन्ही के क़रीब से गुज़रते हैं। मैं इराक़ के रास्ते से शाम जाना चाहता हूँ। फ़ुरात ने कहा कि मैं तुम्हें इराक़ के ऐसे रास्ते से लेकर जाऊँगा जहां से अस्हाब-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बिल्कुल ख़बर न होगी। यह सुनसान और ग़ैर-आबाद रास्ता है। सफ़वान ने कहा मैं भी यही चाहता हूँ। इसकी ब्याबानी हमारे लिए कोई ज़्यादा परेशानी का सबब नहीं क्योंकि अब सर्दी का मौसम है इसलिए हमें रास्ते में पानी की ज़रूरत बहुत कम ही पड़ेगी जिसे हम बर्दाश्त कर लेंगे।

बहरहाल सफ़र की तैयारी शुरू हो गई। इसके बाद सफ़वान बिन अमय ने क़ाफ़िले की तैयारी के लिए सबको कह दिया। जमा पूँजी अपने साथ ली। चांदी के बर्तन, चांदी की डलियां और अन्य साज़ो सामान भी साथ ले लिया। अबू ज़मआ ने भी सफ़वान को तीन सौ मिस्क़ाल सोना और चांदी की डलियां थमाई ताकि वह उसके लिए ख़रीदारी कर सके। एक मिस्क़ाल सोना तक़रीबन सवा चार ग्राम, 4.37 ग्राम के बराबर है। बहरहाल काफ़ी मिक़दार में था यह। एक रिवायत में यह भी है कि सफ़वान काफ़ी सारा माल लेकर निकला जिसमें चांदी की डलियां और चांदी के बर्तन थे जिनका वज़न तीस हज़ार दिरहम की मालियत का था। अबूसुफ़ियान बिन हर्ब भी अपने साथ कसीर चांदी लेकर निकला और अन्य क़ुरैश के लोगों ने भी अपनी अपनी ख़रीदारी के लिए सोना चांदी इत्यादि काफ्ले में शामिल होने वालों के सपुर्द कर दिया। सफ़वान और अबूसुफ़ियान के इलावा भी कई लोग इस तिजारती क़ाफ़िले के साथ हो लिए जैसे अब्दुल्लाह बिन अबी रबीह। होवैतब बिन अब्दुल अजी इत्यादि। यूं फ़ुरात बिन हय्यान की रहबरी में बरास्ता तरीक़ इराक़, इराक़ के रस्ते से शाम की तरफ़ तिजारत के लिए क़ुरैश का यह क़ाफ़िला रवाना हुआ।

सरिया की तारीख़ और अन्य नाम के बारे में आता है कि यह सरिया जमादीउल हिज्री में पेश आया। सरिया की जगह के लिहाज़ से इस कार्रवाई को सरिया क़रदह भी कहा जाता है। करदा नजद के पानियों में से एक पानी है। क़ुरैश मक्का ने अपनी तरफ़ से पूरी एहतियात से इस रास्ते को इख़तेयार किया जिसका ऊपर वर्णन हो चुका है। उनकी कोशिश यही थी कि किसी तरह भी इसकी ख़बर मदीना न पहुंचे अन्यथा हमारा इस रास्ते से जाना भी मुहाल हो जाएगा लेकिन अल्लाह को कुछ और ही मंज़ूर था। अहल मक्का से तो यह ख़बर छुप नहीं सकती थी। इसलिए नुमान बिन मसऊद अशर को इस योजना का इलम हो गया। इन्ही दिनो में उसे किसी काम से मदीना जाना पड़ा। यह अभी बेदीन और मुशरिक था। उसने मदीना में बनू नज़ीर के सरदार किनअना बिन अबी हुकेक के हाँ क़ियाम किया। उसने उसे शराब पिलाई। एक सहाबी सली बिन नुअमान बिन असलम का बनू नज़ीर के हाँ अक्सर आना जाना रहता था। इस दौरान ये भी वहां आ गए जहां किनाना बिन अबी हकीक और नीईम मजलिस लगाए बैठे थे। नीईम शराब के नशे में धुत था। इसलिए वह अपने ऊपर क़ाबू न रख सका और नशे में ही राज़ फ़ाश कर दिया। उसने सफ़वान बिन उमयया की निगरानी में इराक़ के रास्ते से शाम की तरफ़ जाने वाले तिजारती क़ाफ़िले के विषय में सब कुछ कह दिया। सुलेत बिन नुमान सुन कर बाहर निकले और जा कर ये सब कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मशवरा किया। रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह इत्तिला पाते ही फ़ौरन तैयारी शुरू की और एक सौ शहसवारों का लश्कर रवाना कर दिया। इसका नेतृत्व हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द किया।

हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए यह सबसे पहला अवसर था जब उन्हें किसी इस्लामी लश्कर के नेतृत्व पर निर्धारित किया गया और वह इस मुहिम में सफल हुए।

एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो को सौ सवारों के साथ भेजा। वह उनकी तरफ़ रवाना हुए और क़ाफ़िले से जा मिले। क़ाफ़िले वालों में से सरदार जंगल की तरफ़ भाग गए। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक या दो आदमियों को क़ैदी बनाया और क़ाफ़िला का सामान लेकर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आ गए। आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसके पाँच हिस्से किए और ख़ुमस की मालियत उस वक़्त बीस हज़ार दिरहम की क़ीमत के बराबर हुई। बाक़ी माल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सरिया वालों में तक़सीम फ़र्मा दिया।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 1395-398 मकतबा दारुल मारूफ़ लाहौर)

(किताब अल्मग़ाज़ी लिल्वाकदी भाग 1 पृष्ठ 198 मकतबा आलेमुल कुतुब)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 233 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

एक और रिवायत में है कि हज़रत ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो ने निहायत तेज़ी से रास्ता तै किया और अभी क़ुरैश का क़ाफ़िला बिल्कुल बे-ख़बरी के आलम में करदह नामी एक चशमा पर पड़ाव डालने के लिए उतर रहा था कि उसे जा लिया और अचानक यलग़ार कर के पूरे क़ाफ़िले पर क़बज़ा कर लिया। सफ़वान बिन उमयया और अन्य लोगों को भागने के सिवा कोई चारा कार नज़र न आया। मुस्लमानों ने क़ाफ़िले के राहनुमा फ़ुरात बिन हय्यान को और कहा जाता है कि मज़ीद दो आदमियों को गिरफ़्तार कर लिया। बर्तनों और चांदी की बहुत बड़ी मिक़दार जो क़ाफ़िले के पास थी और जिसका अंदाज़ा एक लाख दिरहम था बतौर ग़नीमत हाथ आई। रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुमस निकाल कर माल-ए-ग़नीमत लश्कर के अफ़राद में तक़सीम कर दिया। क़ुरैश के रहबर फ़ुरात बिन हियान ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दस्त-ए-मुबारक पर इस्लाम क़बूल कर लिया।

(अल् रहीक् अल्मुख़्तूम पृष्ठ 337 मकतबा सलफ़ी्या) फिर उसकी बाक़ी बातें इंशा-ए-अल्लाह आगे।

यह जो क़ाफ़िले चलते थे उनको जो रोकना था यह इसलिए था कि वे मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंगों की तैयारी के लिए सामान इकट्ठा करते थे। आजकल के ज़माने में जिस तरह sanctions लगाई जाती हैं यह इसी तरह की एक किस्म थी। यह तो अपने उद्देश्य हासिल करने के लिए करते हैं बल्कि कुछ जगह तो ग़लत किस्म की लगा देते हैं। उदारणतः अमरीका ने योगंडा पर sanctions इसलिए लगा दें कि उन्होंने पार्लीमैंट में LGBT के ख़िलाफ़ क़ानून पास किया है। गो यह नाम नहीं लेते लेकिन असल अंदर से यही बात है। तो उन लोगों का तो यह हाल है। इस्लाम पर उन्होंने क्या एतराज़ करना है। बहरहाल ये बातें इंशा अल्लाह आइन्दा भी होंगी

फिलिस्तीन के मज़लूमों के लिए मैं दुआ के लिए दुबारा कहता हूँ।

अब कम से कम इतना हुआ है कि कुछ ग़ैर मुस्लिम और कुछ सियास्तदान डरते डरते ही कुछ न कुछ इस ज़ुलम के ख़िलाफ़ बोलने लग गए हैं बल्कि अब तो कुछ यहूदियों ने भी इस अमल से बेज़ारी का इज़हार किया है और इसराईली हुकूमत को कहा है कि हमें बदनाम क्यूँ-कर रहे हो। तो बहरहाल छोटी छोटी आवाज़ें कहीं न कहीं से ग़ैरों में भी उठने लग गई हैं। अब ये कहते हैं कि चार घंटे के लिए रोज़ाना जंग रोकें जिसको pause का नाम उन्होंने दिया है ताकि फिलिस्तीनियों तक मदद पहुंच सके। अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि इस पर कितना अमल होगा और बाक़ी जो बीस घंटे का वक़्त है इस में उन्होंने फिलिस्तीनियों पर कितने ज़ुलम करने हैं। अल्लाह बेहतर जानता है कितनी बमबार मिनट करेंगे।

अक्सर बड़ी हुकूमतें और सियास्तदान भी फिलिस्तीनियों की जानों को कोई महत्त्व नहीं दे रहे। उनके अपने मुफ़ादात हैं लेकिन बहरहाल उन लोगों को भी याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला भी एक वक़्त तक ढील देता है और केवल यही दुनिया नहीं, अगला जहान भी है।

ये समझते हैं कि यहां इस दुनिया में हमने फ़ायदे उठा लिए तो सब कुछ हासिल हो जाएगा। इस दुनिया में भी पकड़ हो सकती है और अगले जहान में भी पकड़ होगी। बहरहाल हमें भी दुआओं की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए। अल्लाह तआला उत्पीड़ित फिलिस्तीनियों की दाद रस्सी करते हुए उन्हें इन ज़ुल्मों से नजात दिलवाए।

इस वक़्त नमाज़ के बाद मैं जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाऊंगा पहला जनाज़ा एक जनाज़ा है मंसूरा बासमा साहिबा का, जो हमीदुर्रहमान ख़ान साहब की पत्नी थीं पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह नवाब अब्दुल्लाह ख़ान साहब और हज़रत साहबज़ादी अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हो की पोती थीं। हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत बोज़ेंब बेगम साहिबा की नवासी थीं। मियां अब्बास अहमद ख़ान साहब और अमतुल बारी बेगम साहिबा की बेटी थीं। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसिया भी थीं। अच्छी नेक फ़ितरत ख़ातून थीं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने उनके निकाह का जब ऐलान फ़रमाया तो जो ख़ुत्बा दिया इस में कुछ नसाएह भी थीं। इसलिए मैं ख़ुत्बा का कुछ हिस्सा सुना भी देता हूँ। आप रहमहुल्लाह ने फ़रमाया कि निकाह के साथ लड़की और लड़के पर ऐसी नई ज़िम्मेदारियाँ आयद होती हैं जो इससे क़बल उन पर आयद नहीं थीं। फ़रमाया एक तो मियां बीवी की बाहमी ज़िम्मेदारियाँ हैं अर्थात पति की बीवी पर और बीवी की पति पर और दूसरे दोनों ने मिलकर कुछ ज़िम्मेदारियाँ निभानी हैं जिनका ताल्लुक़ उनकी औलाद से होता है। जहां तक औलाद से ताल्लुक़ है कुछ ज़िम्मेदारियाँ बटी होती हैं। माँ बच्चे को दूध पिलाती है, बाप नहीं पिलाता। बाप घर से बाहर बच्चे का ख़्याल रखता है कि इस में आवारगी पैदा न हो। औरत की ज़िम्मेदारी घर की हदूद के अंदर से ताल्लुक़ रखती है। बहरहाल दोनों यदि अपने ये हुक़ूक़ अदा करें तो बहुत सारी क़बाहतों से आज भी हमारे बच्चे बच सकते हैं। फिर आप ने फ़रमाया कि जो आयात हम इस अवसर पर पढ़ते हैं इस किस्म की नई ज़िम्मेदारियों की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि एक तो ज़रूरी है कि يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ (निसा : 2) यहां आयत में اتَّقُوا اللّٰهَ भी है और बहुत सेcontext में तक़्वा का वर्णन है लेकिन इस आयत में जो निकाह के अवसर पर पढ़ी जाती है रब का तक़्वा। और ये रब का तक़्वा कि जिस तरह अल्लाह तआला अपने बंदों की रबूबियत करने वाला है तुम दोनों की रबूबियत करने वाला है। इसी तरह तुम पर भी रबूबियत की ज़िम्मेदारियाँ कुछ नई पड़ने वाली हैं और इसी सूरत में तुम अदा कर सकोगे जब तुम हक़ीक़ी रब,अल्लाह का तक़्वा इख़्तेयार करोगे। दूसरे यह कि यह रिश्ता बड़ा नाज़ुक होता है। बहुत सी ग़लत-फ़हमियाँ, बे एहतियातियों के नतीजा में पैदा हो सकती हैं और इस के बचाओ के लिए हमें हुक्म दिया गया कि قُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا(अब:71) कि महिज़ सच्च से यहां काम नहीं बनेगा बल्कि ऐसे बोल जिनमें किसी किस्म की कजी नहीं होगी, सीधे होंगे इस राह को यदि तुम इख़्तेयार करोगे तो तुम्हारे मध्य कोईmisunderstanding कोई रंजिश पैदा नहीं होगी। और तीसरे ये कि وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ (अल् हशर : 19) तुम्हारे बड़ों ने मुस्तक़बिल का ख़्याल रखते हुए तुम्हारी तर्बीयत की और तुमने अपने मुस्तक़बिल का ख़्याल रखते हुए अपने बच्चों की तर्बीयत करनी है। यह जो मुस्तक़बिल है जिसका ताल्लुक़ उस तर्बीयत से है जो माँ बाप बच्चों की करते हैं यह हर नसल का अलैहदा मुस्तक़बिल है। यह एक ही किस्म का मुस्तक़बिल नहीं। इस वास्ते कि दुनिया और दुनिया का समाज हरकत में है। फ़रमाया अब ज़माना बदल के कुछ का कुछ बन गया है। वह इन्क़िलाब इअज़ीम जिसकी हमेशा बशारत दी गई थी उसके आसार उफ़ुक़ पर हमें नज़र आ रहे हैं। इसलिए आज बाप की ज़िम्मेदारी विभिन्न है इस ज़िम्मेदारी से जो हमारी ज़िम्मेदारी थी बल्कि ज़्यादा एहतियात के साथ ज़्यादा वुसअतों वाली ज़िम्मेदारियों को मद्द-ए-नज़र रखते हुए अपने बच्चों की ज़िम्मेदारी उठानी है ताकि अहमदियत की तर्बीयत का, वह तर्बीयत जिसका ताल्लुक़ सारी दुनिया के साथ है बोझ पड़े आने वाली नसल पर, तो हर आने वाली नसल उसको उठाने के लिए तैयार हो। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला हमें इन चीज़ों को समझने और उन पर अमल करने की तौफ़ीक़ करे।

फिर आप ने फ़रमाया कि जिस निकाह के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ एक अज़ीज़ा बच्ची का है जो हमारे छोटे फूफा नवाब अब्दुल्लाह ख़ान की पोती और फूफी अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा की पोती है। आप ने फ़रमाया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की चौथी नसल शुरू हो गई है। हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब की यह नवासी है। आपने फ़रमाया कि और इस दूसरे रस्ते से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इसका ताल्लुक़ है। ज़िम्मेदारियाँ दोहरी हैं। यदि ज़िम्मेदारियाँ दोहरी हैं, यदि हमारे लिए बशारात भी दोहरी हैं तो इसलिए इंज़ार भी दोहरा है। और फिर आपने समझाया ख़ानदान के बच्चों को और बड़ों को भी कि उनको अपनी ज़िम्मेदारियों को समझना चाहिए क्योंकि यदि दोहरी ज़िम्मेदारियाँ अदा नहीं करेंगे तो फिर दोहरे इंज़ार को भी देखना होगा। अल्लाह तआला करे कि ख़ानदान के बड़े और बच्चे इस बात को समझने वाले हों।

फिर आप ने फ़रमाया कि मैं जब किसी ऐसे निकाह का ऐलान करता हूँ जिसमें बच्चे और बच्ची का ताल्लुक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ हो रिश्ते के लिहाज़ से तो मेरी तबीयत में फ़िक्र भी पैदा होती है और दुआओं की तरफ़ रुजहान पैदा होता है कि अल्लाह तआला उनको इस मुक़ाम को पहचानने की तौफ़ीक़ अता करे कि वह ख़ादिम होने के लिहाज़ से दूसरे से विभिन्न हैं और उनको ज़्यादा बड़े ख़ादिम बन कर दुनिया में अपनी ज़िंदगी गुज़ारनी चाहिए।

(उद्धृत ख़ुत्बाते नासिर भाग दहम पृष्ठ 710 से 713 ख़ुत्बा निकाह 5 अक्तूबर 1981 ई.)

बहरहाल यह नसीहत वाले अलफ़ाज़ थे इसलिए मैंने वर्णन भी कर दिए। अज़ीज़ा बासमा मंसूरा की ज़ाती ज़िंदगी के बारे में उनकी बेटी राबिया ने लिखा कि बचपन में ही अल्लाह मियां से हमारा परिचय करवाया। अपने नसीब के लिए दुआ पर-ज़ोर देतीं। अक्सर कहतीं कि दुआ किया करो अल्लाह तआला तुम्हारा अच्छे लोगों से वास्ता डाले और इस दुआ का मतलब फिर हमें बड़े हो कर समझ आया, बचपन में तो समझ नहीं आता था। कहती हैं मेरी अम्मी लोगों से बहुत प्यार करने वाली थीं। अपने नफ़्स की क़ुर्बानी कर के लोगों का ख़्याल रखती थीं और यही हक़ीक़त भी है। बज़ाहिर लोगों को यह तास्सुर मिलता कि वे अपनी जान पर ख़र्च करने वाली हैं, लेकिन नहीं। वे ख़ुद की क़ुर्बानी करतीं और दूसरों का ख़्याल रखतीं। उदाहरणतः जलसे पर लंदन भी आतीं तो ग़रीबों के लिए तोहफ़े लेकर जातीं। अपने लिए कुछ न लेतीं। एक लड़की को पाला भी और इस की अच्छी तर्बीयत की फिर उस की शादी भी की। इसके इलावा भी बहुत सारी लड़कियों की शादियां कीं। और घर में भी आना जाना लोगों का रहता था। हमसाइयों को भी खाना इत्यादि भेजती रहती थीं। एक लंगर ख़ाना ही चलता था यहां तक कि बाहर सड़क पर झाड़ू देने वाला आदमी था वह भी खाने के वक़्त उनके पास ही आ के खाना खाया करता था। बहुत सौ के उन्होंने वज़ीफ़े लगाए हुए थे। यदि उनको कहते कि अपने लिए भी कुछ जमा करें तो कहती हैं मैंने कल के बारे में कभी नहीं सोचा। अल्लाह तआला मेरी माली ज़रूरीयात का मालिक है। वाकिफ-ए-ज़िंदगी का बहुत अदब करतीं, बहुत इज़्ज़त करतीं, उनका ख़्याल रखतीं। जो रिश्तेदार वाकफ़ीन ज़िंदगी हैं उनसे ताल्लुक़ रखतीं, दावत करतीं और कहती हैं हमें भी कहा करती थीं कि वाक़फ़ीन-ए-ज़िंदगी तो क़ुर्बानी करते हैं, उनका ख़्याल रखना चाहिए। हर रिश्ता बड़ी ख़ूबी से निभाया। हमेशा यह कहती थीं कि मैं यह नहीं सोचती कि दूसरे ने मेरे साथ क्या-किया। मैं तो जब भी हो, कभी ग़लती होती और ज़्यादती हो भी जाती है तो माफ़ी मांगने में पहल करतीं। मुलाज़िम को भी डाँटतीं तो इस से भी माफ़ी मांग लेतीं और इनाम देतीं।

उनके दामाद मिर्ज़ा तक़ीउद्दीन कहते हैं कि बड़ी छोटी उम्र में उन्होंने वसीयत भी की थी। मैंने भी देखा। वसीयत फ़ार्म देख के पहले मैं हैरान था कि तक़रीबन चौदह साल की उम्र में उन्होंने वसीयत कर दी थी। कहते हैं कि उन्होंने बचपन का ख़ाब सुनाया था। उन्होंने ख़ाब में देखा कि मैं अल्लाह का पांव सख़्ती से पकड़ के रो रही हूँ और कहती थीं कि जब मैं बेदार हुई तो मैं वाक़ई रो रही थी। कहती हैं कि अब तक अल्लाह तआला मेरे सारे काम पूरे कर देता है।

यहां उनकी एक वाक़िफ़ हैं रूही शाह साहिबा। वह कहती हैं कि दोस्ती यदि करतीं तो ख़ूब निभातीं। बड़ी शुक्रगुज़ार तबीयत की मालिक थीं। अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी रहने वाली, उसकी नेअमतों का शुक्र अदा करने वाली थीं और लोगों से

एहसान का सुलूक करतीं। फिर शुक्रगुज़ारी बहुत करतीं, इतनी ज़्यादा कि इन्सान शर्मिंदा हो जाता।

उनकी भावजा ताहिरा फ़ारूक़ साहिबा कहती हैं कि भाभी की बजाय मुझे दोस्त और बहन बना के रखा। बेलौस मुहब्बत करने वाली खरी शख़्सियत की मालिक थीं। रिश्ते निभाने आते थे। जो अपने लिए पसंद करतीं वही दूसरे के लिए पसंद करतीं और कभी कोई बात दिल में नहीं रखती थीं। साफ़, खरी बातें कहने वाली थीं। नमाज़, रोज़ा की पाबंद, क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करने वाली, ख़िलाफ़त के साथ बे-इंतिहा ताल्लुक़ और वाबस्तगी थी। जमाअती कामों में जो भी सपुर्द कर दिए जाते दिलचस्पी लेतीं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। उनके जो पति हैं उन्हें भी सब्र और हौसला दे और बच्चों को भी सब्र और हौसला दे।

दूसरा जनाज़ा चौधरी रशीद अहमद साहिब का है जो ज़रई यूनीवर्सिटी फैसला-बाद में साबिक़ डिप्टी रजिस्ट्रार थे। आजकल अमरीका में थे। उनकी भी पिछले दिनों वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह भी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे।

उनके बेटे रफ़ीक़ ताहिर साहिब वहां लास ऐंजलिस में जमाती ख़िदमत बजा ला रहे हैं, कहते हैं कि ख़ानदान में सबसे पहले अहमदियत उनके बड़े भाई चौधरी बरकत अली साहिब से आई थी और इस के बाद उनके पिता और बाक़ी घर वालों ने बैअत की सआदत पाई। 74 ई. के फ़सादाद में एक हुजूम ने हालाँकि उनका घर यूनीवर्सि-टी के एरिया के अंदर था, यूनीवर्सिटी के क्वार्टरों में था, लेकिन फिर भी हुजूम ने हमला किया और घर लूट के उनका सारा सामान जला दिया। बहरहाल वह तो उस वक़्त वहां से चले गए और जब दो तीन महीने बाद हालात बेहतर हुए तो यूनीवर्सिटी वापस आए। वायस चांसलर ने कहा कि करेसनट मिल का मालिक जो है वह कहता है कि मैं आपका नुक़्सान पूरा करना चाहता हूँ। मुझे बताएं कि कितना नुक़्सान हुआ है? तो चौधरी रशीद साहिब ने आसमान की तरफ़ उंगली उठाते हुए कहा कि बिल्कुल नहीं। मैं किसी से नहीं मदद लूँगा। मैं अल्लाह तआला की राह में यह नुक़्सान बर्दाश्त कर रहा हूँ। अल्लाह तआला की राह में यह नुक़्सान मुझे हुआ है और अल्लाह तआला ही नुक़्सान को पूरा करेगा। बहरहाल अल्लाह तआला ने फिर ऐसा फ़ज़्ल फ़रमाया कि बड़े कम वक़्त में सारे नुक़्सान की तलाफ़ी भी हो गई। ख़िलाफ़त के साथ बड़ा मुहब्बत और इताअत का एक रिश्ता था। अहकामात की लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ तकमील करने की कोशिश करते थे। ईमानदारी इतनी हद तक थी कि यूनीवर्सिटी ग्रांट कमीशन के मैंबर थे। बड़ा एज़ाज़ है यह भी।और एक दफ़ा मीटिंग थी उनको मीटिंग में जाने के लिए ट्रेन के किराया के एसी के टिकट के पैसे मिले। वापसी पर उनके कुछ रिश्तेदारों ने कहा कि हमने साथ जाना है तो उन्होंने अपना टिकट चेंज करवा लिया और सैकिण्ड क्लास में रिश्तेदारों के साथ गए और बाक़ी पैसे जो थे वह हुकूमत को वापस कर दिए। एक दफ़ा यह वहां उनका यूनीवर्सिटी ग्रांट कमीशन का जो चेयरमैन था उसके दफ़्तर में गए तो उन्होंने उनको मिलने के लिए अपना कार्ड भेजा तो डायरेक्टर साहिब जो थे वह ख़ुद बाहर आ गए और अपने एक दोस्त को जो वहां बैठे हुए थे कहने लगे कि यह वह शख़्स है जिसकी दियानतदारी का मैं आपसे वर्णन कर रहा था कि ऐसा दयानतदार शख़्स है। तो उन्होंने वहां फ़ौरन जमाती परिचय भी करवा दिया कि मैं अहमदी हूँ। यह सारी जौ अमानतदारी है ये अहमदी होने की वजह से मेरे पास है। अतः अहमदियों के लिए भी एक सबक़ है। हमेशा ईमानदारी से अपने फ़रायज़ अंजाम देने चाहिऐं और किसी किस्म का कभी माली लालच नहीं करना चाहिए

चंदों की अदायगी और माली क़ुर्बानी में पेश पेश होते थे। वालदैन, बहन भाईयों के इलावा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम की तरफ़ से भी बाक़ायदगी से तहरीक जदीद और वक़्फ़-ए--जदीद के चंदे दिया करते थे। बहुत प्यार करने वाली शख़्सियत थी। यूनीवर्सिटी के सारे तलबा को बच्चों और भाईयों की तरह रखा। एक नमाज़, मग़रिब की नमाज़ खासतौर पर हम सब इकट्ठे हो कर उनके घर में पढ़ा करते थे। हमेशा मुस्कुराते चेहरे के साथ मिलते थे। बड़े नेक इन्सान थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

कराएगा। इसलिए अपने वक़्त पर यह भविष्यवाणी पूरी हुई।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 480-481)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हो ने मेरी दानिस्त में बहुत अच्छा काम किया कि ख़िलाफ़त से अलग हो गए। पहले ही हज़ारों ख़ून हो चुके थे। उन्होंने पसंद न किया कि और ख़ून हों। इस लिए मुआविया से गुज़ारा ले लिया। चूँकि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हो के इस फ़ेअल से' अर्थात अनुबंध कर लेने से"शीया पर ज़िद होती है इस लिए इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हो पूरे राज़ी नहीं हुए। हम तो दोनो की प्रशंसा करने वाले हैं।" अर्थात हसन के भी और हुसैन के भी। "असली बात यह है कि हर शख़्स के जुदा-जुदा अंग मालूम होते हैं। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हो ने पसंद न किया कि मुस्लमानों में ख़ाना-जंगी बढ़े और ख़ून हूँ। उन्होंने अम्न पसंदी को मद्द-ए-नज़र रखा और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो ने पसंद न किया कि फ़ासिक़ फ़ाजिर के हाथ पर बैअत करूँ क्योंकि इस से में ख़राबी होती है। दोनों की नीयत नेक थी। اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّیَّاتِ (मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 278-279 ऐडीशन 1984 ई. यह था इन बच्चों का क़िस्सा)

जैसा कि मैं कई ख़ुत्बों से फिलिस्तीनियों के लिए दुआ का वर्णन कर रहा हूँ। आज भी इसी बारे में कहना चाहता हूँ। दुआएं जारी रखें। अब तो ज़ुलम की इंतेहा होती जा रही है। हम्मास से जंग के नाम पर मासूम बच्चों, औरतों, बूढ़ों, बीमारों को मारा जा रहा है। हर किस्म के जंगी उसूल-ओ-ज़वाबत को इस तथाकथित मुहज़्ज़ब दुनिया ने पीछे डाल दिया है। अल्लाह तआला मुस्लमान देशों को भी समझ दे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने बहत्तर, तिहत्तर साल पहले यह चेतावनी दी थी कि मुस्लमानों को एक होना चाहिए। यदि एक न हुए तो वे फ़ैसला करें कि एक-एक कर के मरना है। एक एक कर के अपने आपको तबाह करना है या एक ही वजूद हो कर अपना एक वजूद बरक़रार रखना है और बाक़ी रहना है।

काश कि अब भी ये लोग इस बात को समझ जाएं और एक हो जाएं।

हालत तो ये है कि मुझे किसी ने बताया कि उमरा पर जाने वालों को कहा जा रहा है कि वहां जा कर फिलिस्तीन या इसराईल की जंग के बारे में कोई बात नहीं करनी। वहां की हुकूमत वीज़ा देते हुए यह हिदायत करती है। यदि यह सही है तो हुकूमत की तरफ़ से, मुस्लमान हुकूमत की तरफ़ से इंतेहाई बुज़दिली का इज़हार है। बहरहाल उमरा की इबादत का हक़ अदा करना चाहिए। इस दौरान तो बहरहाल किसी किस्म की ऐसी बातें नहीं होंगी लेकिन मज़लूम फिलिस्तीनियों के लिए दुआ तो ज़रूर करनी चाहिए और जो जाने वाले हैं वो काश कि इन दुआओं को भी याद रखें। मुस्लमान हुकूमतें भी आवाज़ उठाती हैं आजकल तो बड़ी कमज़ोर है।

कुछ आवाज़ें उठी हैं। इस से ज़्यादा ज़ोरदार आवाज़ तो कुछ ग़ैर मुस्लिम लोगों और सियासतदानों और हुकूमतों ने उठाई हैं। अल्लाह तआला मुस्लमानों में भी जुर्रत और हिक्मत पैदा फ़रमाए।

यू उन के सैक्रेटरी जनरल भी अच्छा बोलते हैं आजकल तो वे ज़्यादा अच्छा बोल रहे हैं लेकिन उनकी आवाज़ की लगता है कोई महत्त्व नहीं है। लगता है कि इस जंग के ख़ातमे के बाद या यदि ये मज़ीद फैल गई और आलमी जंग की सूरत इख़्तेयार कर ली तो यू.एन. का भी ख़ातमा हो जाएगा। अल्लाह तआला दुनिया को अक़्ल दे। लगता है कि अब दुनिया अपनी तबाही को क़रीब-तर ले के आ रही है और इस तबाही के बाद जो लोग बचेंगे उन्हें अल्लाह तआला अक़्ल दे और वे ख़ुदा तआला की तरफ़ तवज्जा पैदा करें और इस की तरफ़ लौट कर आएं। बहरहाल हमें इस हवाले से बहुत दुआएं करनी चाहिऐं। अल्लाह तआला दुनिया पर रहम फ़रमाए।

★ ★ ★

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

ख़ुत्बः जुमअः

. जो अनुबंध हिजरत के बाद मुस्लमानों और यहूद के मध्य हुआ उसके अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को एक मामूली शहरी की हैसियत हासिल नहीं थी बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस लोकतांत्रिक सलतनत के सदर क़रार पाए थे जो मदीने में क़ायम हुई थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह इख़तेयार दिया गया था कि समस्त झगड़ों और राजनैतिक मामलो में जो फ़ैसला मुनासिब समझें जारी फ़रमाएं

उस वक़्त के प्रचलित क़ानून या तरीक़ के अनुसार काब से जो सुलूक हुआ उस पर यहूदियों का ख़ामोश रहना बताता है कि उन्होंने इस सज़ा और इस सुलूक को स्वीकार किया। अतः तारीख़ में किसी जगह भी वर्णित नहीं कि इसके बाद यहूदियों ने कभी काब बिन अशर्फ़ के क़तल का वर्णन करके मुस्लमानों पर आरोप लगाया हो क्योंकि उनके दिल महसूस करते थे कि काब अपनी मुस्तहिक़ सज़ा को पहुंचा है।

यह बहुत बेहतर है कि एक शरीर और मुफ़सिद आदमी क़तल हो जाए बजाय उसके कि बहुत से पुरअमन शहरियों की जान ख़तरे में पड़े और देश की शांति भंग हो

उमर! कुछ फ़िक्र न करो। ख़ुदा को मंज़ूर हुआ तो हफ़सा को उस्मान और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की निस्बत बेहतर पति मिल जाएगा और उस्मान को हफ़सा की निसबत बेहतर बीवी मिलेगी

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जिस तरह अपनी औलाद हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा से बहुत मुहब्बत थी इसी तरह हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा की औलाद से भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को विशेष मुहब्बत थी। कई दफ़ा फ़रमाते थे ख़ुदाया! मुझे इन बच्चों से मुहब्बत है तू भी उनसे मुहब्बत कर और उनसे मुहब्बत करने वालों से मुहब्बत कर

फ़ुरात बिन हयान के क़बूल-ए-इस्लाम की तफ़सीलात, काब बिन अशर्फ़ के क़तल का वाक़िया, इस में हिक्मत और इस पर उठने वाले आरोपों के उत्तर

उम्मुल-मोमेनीन हज़रत हफ़सा बिंत उमर रज़ियल्लाहु अन्हा के नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से निकाह और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास नवासा नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के जन्म का वर्णन

फिलिस्तीन के उत्पीड़ितों के लिए दुआ की पुनः तहरीक

लगता है कि अब दुनिया अपनी तबाही को क़रीब-तर ले के आ रही है और इस तबाही के बाद जो लोग बचेंगे उन्हें अल्लाह तआला अक़ल दे और वे ख़ुदा तआला की तरफ़ तवज्जा पैदा करें और उसकी तरफ़ लौट कर आएं। बहरहाल हमें इस हवाले से बहुत दुआएं करनी चाहिऐं।

अल्लाह तआला दुनिया पर रहम फ़रमाए

इस प्रकार उनके सैक्रेटरी जनरल भी अच्छा बोलते हैं आज कल तो वह ज़्यादा अच्छा बोल रहे हैं लेकिन उनकी आवाज़ का लगता है कोई महत्त्व नहीं है। लगता है कि इस जंग के ख़ातमे के बाद या यदि यह मज़ीद फैल गई और आलमी जंग की सूरत इख़तेयार कर ली तो यू.एन. का भी ख़ातमा हो जाएगा। अल्लाह तआला दुनिया को अक़ल दे

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 17 नवंबर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बा के आख़िर पर जो तारीख़ वर्णन हो रही थी या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी वर्णन हो रही थी उस विषय में फ़ुरात बिन हयान के क़बूल-ए-इस्लाम का भी वर्णन हुआ था। उसके क़बूल इस्लाम की मज़ीद तफ़सील यह है कि यह गिरफ़्तार हो कर क़ैदियों में था जैसा कि पिछले ख़ुत्बा में वर्णन हुआ था। ग़ज़व-ए-बदर के रोज़ भी वह ज़ख़मी हुआ था जबकि किसी तरह क़ैद से भाग निकलने में सफ़ल हो गया। अब फिर वह मुस्लमानों के हाथों गिरफ़्तार था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से देखते ही कहने लगे अब भी तुम अपने तर्ज़-ए-अमल को नहीं बदलोगे? फ़ुरात बोला यदि इस दफ़ा मैं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बच कर निकल गया तो फिर मैं क़ाबू नहीं आऊँगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहने लगे फिर इस्लाम क़बूल कर लो। यदि तुमने बच के निकलना ही है तो एक ही तरीक़ा है कि फिर इस्लाम क़बूल कर लो। बहरहाल फ़ुरात बिन हयान हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की यह बात सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ चल पड़ा। अपने एक अंसारी दोस्त के पास से गुज़रते हुए कहने लगा कि मैं तो मुस्लमान हूँ। अंसारी सहाबी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की कि उसने इस्लाम क़बूल कर लिया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस का मुआमला अल्लाह के सपुर्द करते हुए फ़रमाया। إِنَّ مِنْكُمْ رِجَالًا نَكِلُهُمْ إِلٰى إِيْمَانِهِمْ थी कि निसन्देह तुम में से कुछ ऐसे लोग भी हैं जिन्हें हम उनके ईमान के हवाले करते हैं। यदि यह कहता है कि मैंने इस्लाम क़बूल कर लिया है तो ठीक है। फिर उसका और अल्लाह का मुआमला है। बहरहाल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बात पर उसे रिहा कर दिया।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 398 प्रकाशन दारुल मारूफ़ लाहौर)

(अल् असाबा भाग 5 पृष्ठ 273 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1995 ई.)

तफ़सील में एक यह भी है कि हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो का एक सरिया जमादिउल आखिर सन् 3 हिज्री में क़रदा के स्थान की तरफ़ भेजा गया था। सीरत ख़ातिम नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में इसी वाक़िया को हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यूं लिखा है कि बनू सुलेम और बनू ग़त्फ़ान के हमलों से कुछ फ़ुर्सत मिली तो मुस्लमानों को एक और ख़तरा के निवारण के लिए वतन से निकलना पड़ा। अब तक क़ुरैश अपनी शुमाली तिजारत के लिए साधारणतः हिजाज़ के साहिली रास्ते से शाम की तरफ़ जाते थे लेकिन अब उन्होंने यह रास्ता तर्क

कर दिया क्योंकि इस इलाक़ा के क़बायल मुस्लमानों के हलीफ़ बन चुके थे और क़ुरैश के लिए शरारत का अवसर कम था बल्कि ऐसे हालात में वे इस साहिली रास्ते को ख़ुद अपने लिए ख़तरे का मूजिब समझते थे। केवल यही वजह नहीं थी कि मुस्लमानों से ख़तरा था बल्कि वह ख़ुद जो हरकतें करना चाहते थे, अब उनका ख़्याल था कि इन क़बायल के मुस्लमानों के साथ मुआहिदे की वजह से वह हम नहीं कर सकेंगे और मुस्लमानों को नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेंगे। बहरहाल अब उन्होंने इस रास्ते को तर्क करके नज्दी रास्ता इख़्तेयार कर लिया जो इराक़ को जाता था और जिसके आस-पास क़ुरैश के हलीफ़ और मुस्लमानों के जानी दुश्मन थे। पहले रस्ते वह थे जिनसे मुस्लमानों का अनुबंध हुआ था और इस रस्ते पर जिसको क़ुरैश ने इख़्तेयार किया वहां उनके अपने मुआहिदे वाले थे और वे लोग और क़बायल आबाद थे जो मुस्लमानों के भी जानी दुश्मन थे जो क़बाइल सलीम और ग़त्फ़ान थे। इसलिए जमादिउल आखिर के महीना में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह सूचना प्राप्त हुई कि क़ुरैश मक्का का एक तिजारती क़ाफ़िला नज्दी रास्ता से गुज़रने वाला है। ज़ाहिर है कि यदि क़ुरैश के क़ाफ़िलों का साहिली रास्ते से गुज़रना मुस्लमानों के लिए ख़तरे का मूजिब था तो नज्दी रास्ते से उनका गुज़रना वैसा ही बल्कि इससे बढ़ कर भयभीत था क्योंकि बरख़िलाफ़ साहिली रास्ते के, इस रास्ते पर क़ुरैश के हलीफ़ आबाद थे जो क़ुरैश ही की तरह मुस्लमानों के ख़ून के प्यासे थे और जिन के साथ मिलकर क़ुरैश बड़ी आसानी के साथ मदीना में ख़ुफ़ीया छापामार सकते थे या कोई शरारत कर सकते थे और फिर क़ुरैश को कमज़ोर करने औरउन्हें सुलह जोई की तरफ़ माइल करने की ग़रज़ के मातहत भी ज़रूरी था कि इस रास्ता प्रभी उनके क़ाफ़िलों की रोक-थाम की जावे। इसी लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस ख़बर के मिलते ही अपने आज़ाद करदा ग़ुलाम ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो की सरदारी में अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का एक दस्ता रवाना फ़र्मा दिया।

क़ुरैश के इस तिजारती क़ाफ़िले में अबू सुफ़ियान बिन हर्ब और सफ़वान बिन उमय जैसे रूउसा भी मौजूद थे। ज़ैद ने निहायत चुसती और होशयारी से अपने फ़र्ज़ को अदा किया और रजद के मुक़ाम क़रदा में इन इस्लाम के दुश्मनों को जा पकड़ा। और इस अचानक हमला से घबरा कर क़ुरैश के लोग क़ाफ़िला के अम्वाल और जो भी उनका माल था उस को छोड़ कर भाग गए और ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके साथी एक कसीर माल-ए-ग़नीमत के साथ मदीना में कामयाब-ओ-काम-रान वापस आए।

कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि क़ुरैश के इस क़ाफ़िला का राहबर एक फ़ुरात नामी शख़्स था जो मुस्लमानों के हाथ क़ैद हुआ और मुस्लमान होने पर रिहा कर दिया गया। लेकिन दूसरी रिवायतों से पता लगता है कि वे मुस्लमानों के ख़िलाफ़ मुशरेकीन का जासूस था परंतु बाद में मुस्लमान हो कर मदीना में हिजरत करके आ गया।

(उद्धृत सीरत ख़ातम नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 465-466)

एक वाक़िया उन्ही दिनों में काब बिन अशर्फ़ के क़तल का है।

काब बिन अशर्फ़ मदीने के सरदारों में से था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुबंध में शामिल था लेकिन अनुबंध करके बाद में उसने फ़ित्ना फैलाने की कोशिश की और उसके क़तल का हुक्म आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दिया।

बुख़ारी में इस वाक़िया की तफ़सीलात यूं दर्ज हैं कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया काब बिन अशर्फ़ से कौन निपटेगा? उसने अल्लाह और उस के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सख़्त दुख दिया है। मुहम्मद बिन रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हो गए कहने लगे। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या आप चाहते हैं कि मैं उसे मार डालूं? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ! इसलिए मुहम्मद बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो काब के पास आए और कहने लगे। उस शख़्स ने हम से सदक़ा मांगा है और उसने हमें कष्ट में डाल दिया है अर्थात आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ बात मंसूब करके कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे सदक़ा मांगा है और मशक़्क़त में डाल दिया है। मैं तुम्हारे पास आया हूँ तुम से उधार लूं। उसने कहा ख़ुदा की कसम! तुम इस से उकता जाओगे। अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से उकता जाओगे और पीछे हट जाओगे। बहरहाल मुहम्मद बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि चूँकि हमने उस की पैरवी इख़्तेयार कर ली है इसलिए हम पसंद नहीं करते कि उसे छोड़ दें यहां तक कि हम देख लें कि इस का अंजाम क्या होता है और हम चाहते हैं एक या दो वसक हमें उधार दो। काब ने कहा अच्छा!च मेरे पास कुछ गिरवी रखो। उन्होंने कहा तुम क्या वस्तु चाहते हो? काब ने यह कहा कि अपनी औरतें मेरे पास गिरवी रखो। उन्होंने कहा कि तुम्हारे पास अपनी औरतें कैसे गिरवी रखें जबकि तुम अरबों में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत हो। उसने कहा फिर अपने बेटे मेरे पास गिरवी रखो। उन्होंने कहा हम तुम्हारे पास अपने बेटों को कैसे गिरवी रखें। उनमें से हर एक को ताना दिया जाएगा, कहा जाएगा कि वह एक या दो वसक के लिए गिरवी रखे गए थे। यह हमारे लिए कष्ट है लेकिन हम तुम्हारे पास अपनी ज़िरहें रहन रखते हैं। ज़िरहों से मुराद यहां जंगी सामान भी है। इसलिए उन्होंने काब से फिर उसके पास आने का वादा किया। इसलिए वह उसके पास रात को आए और उनके साथ अबू नायला भी थे जो काब के रज़ाई भाई थे। उसने उन्हें क़िला में बुलाया और वह उनके पास क़िला में जब चले गए तो वह अपने बालाखाना से नीचे उतरा। इसकी पत्नी इस से कहने लगी कि इस वक़्त तुम कहाँ जाते हो? काब ने कहा यह तो मुहम्मद बिन मुस्लिमा और मेरे भाई अबू नायला हैं। उन्होंने बुलाया है। उनके पास जा रहा हूँ। इसकी बीवी ने कहा मैं ऐसी आवाज़ सुनती हूँ कि गोया जिससे ख़ून टपक रहा है। काब बोला कि सम्मानित आदमी को रात के वक़्त हमले के लिए भी बुलाया जाए तो वह ज़रूर जाएगा। बहरहाल मुहम्मद बिन रज़ियल्लाहु अन्हो अपने साथ दो आदमी भी ले गए थे। मुहम्मद बिन रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन आदमियों को कहा कि जब काब आए तो मैं इस के बाल पकड़ूंगा और उसे सूंघूँगा। जब तुम देखो कि मैंने उसका सिर मज़बूती से पकड़ लिया है तो तुम बढ़कर उसका काम समाप्त कर देना। इसलिए काब उनके पास चादर लपेटे हुए नीचे आया और उस से ख़ुशबू की लपटें उठ रही थीं। मुहम्मद बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा। आज जैसी ख़ुशबू तो मैंने कहीं नहीं पाई अर्थात बेहतरिन ख़ुशबू है। काब ने कहा मेरे पास अरब की औरतों में से सबसे ज़्यादा मुअत्तर हैं और सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत। मुहम्मद बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा क्या तुम मुझे इजाज़त देते हो कि तुम्हारे सिर को सूंघें? उसने कहा हाँ तू उन्होंने उसको सूँघा फिर अपने साथियों को भी सूँघाया। फिर कहा क्या तुम मुझे इजाज़त देते हो? उसने कहा हाँ फिर जब मुहम्मद बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस को मज़बूती से पकड़ लिया तो अपने साथियों को कहा कि तुम उसको पकड़ो और उन्होंने उस को क़तल कर दिया। फिर वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बताया।

(उद्धृत सही अल् बुख़ारी किताब अल्मग़ाज़ी बाब क़तल काब बिन अशरफ़ रिवायत 4037)

काब के ज़ख़मी होने की मज़ीद तफ़सील बुख़ारी की शरह उंदतुल कारी में यह लिखी है कि मुहम्मद सलमा बिन रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने साथियों के साथ जब काब बिन अशर्फ़ पर हमला किया और इसको क़तल कर दिया तो उनके एक साथी हज़रत हारिस बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो को तलवार की नोक लगी और वह ज़ख़मी हो गए। अपने साथियों की तलवार की नोक से ज़ख़मी हुए थे। इसलिए आप रज़ियल्ला-हु अन्हो के साथी उन्हें उठा कर तेज़ी से मदीना पहुंचे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हारिस बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़ख़म पर अपना लुआब लगाया और इसके बाद उन्हें तकलीफ़ हुई।

(उम्दतुल कारी भाग 17 पृष्ठ 192 किताब अल्मग़ाज़ी बाब क़तल काब बिन अशरफ़ प्रकाशन दारुल अह्या तुर्रास बेरूत 2003 ई.)

काब बिन अशर्फ़ के क़तल का वाक़िया सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में जो लिखा गया है वह इस तरह है जिसका उस वक़्त में यहां मुख़्त-सर वर्णन करूँगा। बदर की जंग ने जिस तरह मदीना के यहूदियों की दिल की अदावत को ज़ाहिर कर दिया था और बनू क़ेनुक़ा की जलावतनी भी दूसरे यहूदियों को इस्लाह की तरफ़ मायल न कर सकी थी और वह अपनी शरारतों और फ़ित्ना परदाज़ियों में तरक़्क़ी करते गए। इसलिए काब बिन अशर्फ़ के क़तल का वाक़िया उसी सिलसिला की एक कड़ी है। काब जबकि धर्म से यहूदी था लेकिन दरअसल यहूदी नसल का नहीं था बल्कि अरब था। उसका बाप अशर्फ़ बनू केनका का होशयार और चलता पुर्ज़ा आदमी था जिसने मदीने में आकर बनू नज़ीर के साथ ताल्लुक़ात पैदा किए। उनका सहायक बन गया और अंततः उसने इतना इक़तेदार और रसूख़ पैदा कर लिया कि क़बीला बनू नज़ीर के रईस आज़म अबू राफ़े बिन अबू आला ने अपनी लड़की उसे रिश्ता में दे दी। इस लड़की के पेट से काब पैदा हुआ जिस ने बड़े हो कर अपने बाप से भी बढ़कर रुत्बा हासिल किया। यहाँ तक कि अंततः उसे यह हैसियत हासिल हो गई कि समस्त अरब के यहूदी उसे गोया अपना सरदार समझने लग गए। काब एक वजीह और शकील शख़्स होने के इलावा एक क़ादिरुल कलाम शायर और निहायत दौलत-मंद आदमी था। हमेशा अपनी क़ौम के उल्मा और दूसरे प्रभावी लोगों को अपनी माली फ़य्याज़ी से अपने हाथ के नीचे रखता था परंतु अख़लाक़ी नुकता-ए-नज़र से वह एक निहायत गंदे अख़लाक़ का आदमी था और ख़ुफ़ीया चालों और रेशा दिवानियों के फ़न में उसे कमाल हासिल था। कोई बुराई ऐसी नहीं थी जो इस में न हो। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना में हिजरत करके तशरीफ़ लाए तो काब बिन अशर्फ़ ने दूसरे यहूदियों के साथ मिलकर इस अनुबंध में शिरकत इख़्तेयार की जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और यहूद के मध्य बाहमी दोस्ती और अमन--ओ-अमान और मुशतर्का दिफ़ा के मुताल्लिक़ तहरीर किया गया था। वास्तविक रूप में तो यह अनुबंध उसने किया परंतु अंदर ही अंदर काब के दिल में द्वेष और बदले की

आग सुलगने लगी और उस ने ख़ुफ़ीया चालों और मख़फ़ी साज़-बाज़ से इस्लाम और बानी इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुख़ालेफ़त शुरू कर दी। इसलिए लिखा है कि काब हर साल यहूदी आलिमों और शेखों को बहुत सी ख़ैरात कर दिया करता था लेकिन जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिजरत के बाद ये लोग अपने सालाना वज़ीफ़ा लेने के लिए उसके पास आए तो उस ने बातों बातों में उनके पास आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वर्णन शुरू कर दिया और उन से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुताल्लिक़ मज़हबी कुतुब के आधार पर राय दरया-फ़त की। तो उन्होंने कहा कि बज़ाहिर तो यह वही नबी मालूम होता है जिसका हमें तौरेत में वाा दिया गया है। काब इस जवाब पर बड़ा बिगड़ गया और सब को बड़ा सख़्त सुस्त कहा और बुरा-भला कहा और रुख़स्त कर दिया। और जो ख़ैरात उन्हें दिया करता था वह नहीं दी। यहूदी उल्मा की जब रोज़ी बंद हो गई तो कुछ अरसा के बाद फिर काब के पास गए और कहा कि हमें अलामात समझने में ग़लती लग गई थी हमने दुबारा ग़ौर किया है। दरअसल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह नबी नहीं हैं जिसका वाअदा दिया गया था। इस जवाब से फिर काब का मतलब हल हो गया और उस ने ख़ुश हो कर उनको सालाना ख़ैरात दे दी। बहरहाल यह तो एक मज़हबी मुख़ालेत थी जो गो नागवार सूरत में की गई लेकिन एतराज़ के योग्य नहीं हो सकती थी कि इस पर सज़ा मिले उसे इस आधार पर काब को ज़ेर आरोप समझा जा सकता था। इस के बाद काब की मुख़ालेफ़त ज़्यादा ख़तरनाक सूरत इख़तेयार कर गई और अंततः जंग-ए-बदर के बाद तो उस ने ऐसा व्यवहार इख़तेयार किया जो सख़्त मुफ़सेदाना और फ़िल्ला अंगेज़ था। जिसके नतीजा में मुस्लमानों के लिए निहायत ख़तरनाक हालात पैदा हो गए। दरअसल बदर से पहले काब यह समझता थाकि मुस्लमानों का जोश-ए-ईमान एक आरिज़ी चीज़ है और आहिस्ता आहिस्ता ये सब लोग ख़ुद बख़ुद मुंतशिर हो कर अपने आबाई मज़हब की तरफ़ लौट आएँगे लेकिन जब बदर के अवसर पर मुस्लमानों को ग़ैर मुतवक़्क़े फ़त्हा नसीब हुई और क़ुरैश के सरदारों में अक्सर मारे गए तो इस ने समझ लिया कि अब यह नया दीन यूंही मिटता नज़र नहीं आता। इसलिए बदर के बाद उसने अपनी पूरी कोशिश इस्लाम के मिटाने और तबाह और बर्बाद करने में खर्च कर देने का तहय्या कर लिया।

इस के दिल्ली बुग़ज़ और हसद कासिब से पहला इज़हार इस अवसर पर हुआ जब बदर की फ़तह की ख़बर मदीना में पहुंची तो इस ख़बर को सुनकर काब ने बड़े सरदार शाहिद कह दिया, बड़ा खुल के गवाही देते हुए ऐलान किया कि यह ख़बर बिल्कुल झूठी मालूम होती है क्योंकि यह मुम्किन नहीं कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ुरैश के ऐसे बड़े लश्कर पर फ़तह हासिल हो और मक्का के इतने नामवर रईस ख़ाक में मिल जाएं और यदि यह ख़बर सच्च है तो फिर उस ज़िंदगी से मरना बेहतर है। बहरहाल जब इस ख़बर की तसदीक़ हो गई और काब को यह यक़ीन हो गया कि सच में बदर की फ़तह ने इस्लाम को वह इस्तहकाम दे दिया है जिसका उसे वहम और गुमान भी न था तो वे द्वेष और गुस्से से भर गया और फ़ौरन सफ़र की तैयारी करके उसने मक्का की राह ली। वहां जाकर अपनी तेज़ ज़बानी और शेअर बोलने के ज़ोर से क़ुरैश के दिलों की सुलगती हुई आग को शोला बना दिया और आग भड़काई। उनके दिल में मुस्लमानों के ख़ून की न बुझने वाली प्यास पैदा कर दी। उनके सीने जज़बात-ए-इंतेक़ाम से भर दिए। और जब काब की भड़काने वाली बातों से उनके एहसासात में एक इंतेहाई दर्जा की बिजली पैदा हो गई तो इस ने उनको ख़ाना काबा के सेहन में ले जाकर और काबा के पर्दे उनके हाथों में दे देकर उनसे क़समें लें कि जब तक इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक को दुनिया की पृष्ठभूमी से मालिया-मेट न कर देंगे उस वक़्त तक चैन से नहीं बैठेंगे। मक्का में यह आतिश-फ़िशाँ फ़िज़ा पैदा करके इस बद-बख़्त ने दूसरे क़बायल का रुख किया और क़ौम बकोम फिर कर मुस्लमानों के ख़िलाफ़ लोगों को भड़काया। फिर मदीना में वापस आकर अपने जोश दिलाने वाले अशआर में निहायत गंदे और फ़ुहश तरीक़ पर मुस्लमान ख़वातीन का वर्णन किया। यहाँ तक कि ख़ानदान नबुव्वत की महिलाओ को भी अपने ओबाशाना अशआर का निशाना बनाने से दरेग़ नहीं किया और मुल्क में इन अशआर का चर्चा करवाया। अंततः उसने आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़तल की साज़िश की और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमको किसी दावत इत्यादि के बहाने से अपने मकान पर बुला कर चंद नौजवान यहूदियों से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़तल करवाने का मन्सूबा बाँधा परंतु ख़ुदा के फ़ज़ल से इसकी समय पर इत्तिला हो गई और इस की यह साज़िश सफ़ल हुई।

जब नौबत यहां तक पहुंच गई और काब के ख़िलाफ़ अह्द शिकनी, बग़ावत, तहरीक-ए-जंग, फ़िल्ला परदाज़ी, फ़ुहश गोई और साज़िश क़तल के इल्ज़ामात पाया सबूत को पहुंच गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो इस बैनुल अक़वामी अनुबंध की दृष्टि से जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मदीने में तशरीफ़ लाने के बाद मदीना वालों से हुआ था, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना की लोकतांत्रिक सलतनत के सदर और हाकिम-ए-आला थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह फ़ैसला जारी फ़रमाया कि काब बिन अशर्फ़ अपनी कार्य-वाइयों की वजह से क़तल करने के योग्य है और अपने कुछ सहाबियों को इरशाद फ़रमाया कि उसे क़तल कर दिया जाए। लेकिन चूँकि उस वक़्त काब की फ़िल्ला अंगेज़ियों की वजह से मदीने की फ़िज़ा ऐसी हो रही थी कि यदि उसके ख़िलाफ़ नियम के रूप में ऐलान करके उसे क़तल किया जाता तो मदीना में एक ख़तरनाक ख़ाना-जंगी शुरू हो जाने का एहतेमाल था। जिसमें न मालूम कितना कुशत-ओ-ख़ून होना था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हर मुम्किन और जायज़ क़ुर्बानी करके बैनुल अक़वामी कुशत और ख़ून को रोकना चाहते थे कि मुस्लमान और यहूदी दोनों आपस में लड़ मर कर नुक़्सान न पहुंचाएं, एक दूसरे से मारे न जाएं। तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह हिदायत फ़रमाई कि काब को बरमला तौर पर क़तल न किया जाए बल्कि चंद लोग ख़ामोशी के साथ कोई मुनासिब अवसर निकाल कर उसे क़तल कर दें और यह डयूटी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने क़बीला ओस के एक मुख़लिस सहाबी मुहम्मद बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द फ़रमाई और उन्हें ताकीद फ़रमाई कि जो तरीक़ भी इख़तेयार करें क़बीला ओस के रईस साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो के मश्वरा से करें। मुहम्मद बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ामोशी के साथ क़तल करने के लिए तो कोई बात कहनी होगी। अर्थात कोई उज़्र इत्यादि बनाना पड़ेगा जिसकी मदद से काब को उस के घर से निकाल कर किसी महफ़ूज़ जगह में क़तल किया जा सके। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इन अज़ीमुश्शान असरात का लिहाज़ रखते हुए जो इस अवसर पर एक ख़ामोश सज़ा के तरीक़ को छोड़ने से पैदा हो सकते थे फ़रमाया कि अच्छा। इसलिए मुहम्मद बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने साद बिन मआज़ के मश्वरा से अबू नायला और दो तीन और सहाबियों को अपने साथ लिया और काब के मकान पर पहुंचे और काब को उसके अंदरून ख़ाना से बुलाकर कहा कि हमारे साहिब अर्थात मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमसे सदक़ा मांगा है और हम तंगहाल हैं। क्या तुम मेहरबानी करके हमें कुछ क़र्ज़ दे सकते हो? यह बात सुनकर काब ख़ुशी से कूद पड़ा। कहने लगा। वल्लाह अभी क्या है। वह दिन दूर नहीं जब तुम उस शख़्स से बेज़ार हो कर उसे छोड़ दोगे। इस पर मुहम्मद बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाब दिया कि ख़ैर हम तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण इख़तेयार कर चुके हैं और अब हम यह देख रहे हैं कि इस सिलसिला का अंजाम क्या होता है। परंतु तुम यह बताओ कि क़र्ज़ दोगे या नहीं ? काब ने कहा कि हाँ यदि कोई चीज़ गिरवी रखो। और उसने पहले औरतों फिर बेटों के गिरवी रखने का कहा जैसा कि अभी बुख़ारी के हवाले से मैंने वर्णन किया है और आख़िर पर उनके हथियार गिरवी रखने पर काब राज़ी हो गया। और मुहम्मद बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके साथी रात को आने का वादा देकर वापस चले गए। जब रात हुई तो यह पार्टी हथियार इत्यादि साथ लेकर काब के मकान पर पहुंचे और उस को घर से निकाल कर बातें करते करते एक तरफ़ ले आए। और फिर थोड़ी देर बाद चलते चलते उसको क़ाबू कर के वह सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो जो पहले हथियारबंद थे उन्होंने तलवार चलाई और उसे क़तल कर दिया। बहरहाल काब क़तल हो कर गिरा और मुहम्मद बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके साथी वहां से रुख़स्त हो कर आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो गए और आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस क़तल की सूचना दी।

जब काब के क़तल की ख़बर प्रसिद्ध हुई तो शहर में एक सनसनी फैल गई और यहूदी लोग सख़्त जोश में आगए। दूसरे दिन सुबह के वक़्त यहूदियों का एक वफ़द आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और शिकायत की कि हमारा सरदार काब बिन अशर्फ़ इस तरह क़तल कर दिया गया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी बातें सुनकर फ़रमाया क्या तुम्हें यह भी मालूम है कि काब किस-किस जुर्म का मुर्तक़िब हुआ था और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने संक्षिप्त में उनको काब की अहदशिकनी, तहरीक-ए-जंग और फ़िल्ला अंगेज़ी और फ़ुहश गोई और साज़िश क़तल इत्यादि की कार्यवाहियां याद दिलाएँ। जिस पर ये लोग डर कर ख़ामोश हो गए। इस के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम्हें चाहिए कि कम से कम आइन्दा के लिए ही अमन और तआवुन के साथ रहें और अदावत और फ़िल्ला-ओ-फ़साद का बीज न बोएं। इसलिए यहूद की रजामंदी के साथ आइन्दा के लिए एक नया अनुबंध लिखा गया और यहूद ने मुस्लमानों के साथ अमन-ओ-अमान के साथ रहने और फ़िल्ला और फ़साद के तरीक़ों से बचने का अज़सर-ए-नौ वादा किया और यह अह्दनामा हज़रत अली रज़ी अल्लाह तआला अन्ना की सुपुर्दगी में दिया गया।

तारीख़ में किसी जगह भी वर्णित नहीं कि इस के बाद यहूदियों ने कभी काब बिन अशर्फ़ के क़तल का वर्णन करके मुस्लमानों पर आरोप आइद किया हो क्योंकि उनके दिल महसूस करते थे कि काब अपनी मुस्तहिक़ सज़ा को पहुंचा है। अतः उस वक़्त के प्रचलित क़ानून या तरीक़ के अनुसार काब से जो सुलूक हुआ इस पर यहूदियों का

ख़ामोश रहना बताता है कि उन्होंने इस सज़ा और इस सुलूक को स्वीकार किया।

कुछ इतिहासकारों बाद में यह एतराज़ करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक नाजायज़ क़तल करवाया और यह ग़लत चीज़ थी। वाज़ेह हो कि यह नाजायज़ क़तल नहीं था क्योंकि काब बिन अशर्फ़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ बाक़ायदा अमन का अनुबंध कर चुका था और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करना तो दरकिनार रहा उसने इस बात का अह्द किया था कि वह हर बैरूनी दुश्मन के ख़िलाफ़ मुस्लमानों की मदद करेगा और मुस्लमानों के साथ दोस्ताना ताल्लुक़ात रखेगा। उसने इस अनुबंध की दृष्टि से यह भी तस्लीम किया था कि जो रंग मदीना में लोकतांत्रिक सलतनत का क़ायम किया गया है उस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सदर होंगे और हर किस्म के तनाज़आत इत्यादि में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का फ़ैसला सब के लिए वाजिब अल् कबूल होगा। इसलिए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि तारीख़ से साबित है कि इसी अनुबंध के तहत यहूदी लोग अपने मुक़द्दमात इत्यादि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश करते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनमें अहकाम जारी फ़रमाते थे। अब इन हालात के होते हुए काब ने समस्त अहदो पैमाँ को बालाए ताक़ रखते हुए छोड़ दिया, अमल नहीं किया और मुस्लमानों से बल्कि हक़ यह है कि हुकूमत-ए-वक़्त से ग़द्दारी की। यहां मुस्लमानों से ग़द्दारी का सवाल नहीं है। उसने हुकूमत-ए-वक़्त से ग़द्दारी की क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सरबराह-ए-हुकूमत थे और मदीना में फ़ित्ना व फ़साद का बीज बोया और मुल्क में जंग की आग मुश्तइल करने की कोशिश की और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ क़बायल अरब को ख़तरनाक तौर पर उभारा। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़तल के मंसूबे किए। ये सब कुछ ऐसी हालत में किया कि मुस्लमान जो पहले ही चारों तरफ़ से मसायब में गिरफ़्तार थे उनके लिए सख़्त मुश्किल हालात पैदा कर दिए और उन हालात में काब का जुर्म बल्कि बहुत से जुर्मों का मजमूआ ऐसा नहीं था कि इस के ख़िलाफ़ कोई ताज़ीरी क़दम न उठाया जाता? इसलिए यह क़दम उठाया गया और आजकल के धर्म के कहलाने वाले देश में बग़ावत और इरादा शिकनी और इश्तिआल जंग और साज़िश के जुर्मों में मुजरिमों को क़तल की सज़ा दी जाती है फिर एतराज़ किस चीज़ का। बल्कि आजकल फिलिस्तीन और इसराईल के मध्य में जो हो रहा है। वह तो बहुत बढ़के हो रहा है और बहरहाल कई लिहाज़ से जायज़ नहीं।फिर दूसरा सवाल क़तल के तरीक़ का यह है

रात को मारा गया है तो इस को ख़ामोशी से क्यों क़तल किया? इस के मुताल्लिक़ याद रखना चाहिए कि अरब में उस वक़्त कोई बाक़ायदा सलतनत नहीं थी। एक सरबराह तो निर्धारित कर लिया था लेकिन केवल उसी का फ़ैसला नहीं होता था बल्कि यदि अपने अपने फ़ैसले करना चाहे तो हर शख़्स और हर क़बीला आज़ाद और ख़ुद मुख़्तार भी था। मजमूई तौर पर मुशतर्का फ़ैसले होते तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आते थे और यदि अपने तौर पर क़बीलों ने करने होते तो वे भी होते थे। तो ऐसी सूरत में वे कौन सी अदालत थी जहां काब के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दायर करके बाक़ायदा क़तल का हुक्म हासिल किया जाता? क्या यहूद के पास शिकायत की जाती जिनका वह सरदार था और जो ख़ुद मुस्लमानों से ग़द्दारी कर चुके थे, आए दिन फ़ित्ने खड़े करते रहते थे? इसलिए यह सवाल ही पैदा नहीं होता कि यहूद के पास जाया जाता। क़बायल-ए-सुलेम और ग़त्फ़ान से दादरसी चाही जाती जो पिछले माह में तीन चार दफ़ा मदीने पर छापा मारने की तैयारी कर चुके थे? वह भी उनके क़बीले थे तो ज़ाहिर है कि उनसे भी कोई इन्साफ़ नहीं मिलना था। बहरहाल उस वक़्त की हालत पर ग़ौर करो और फिर सोचो कि मुस्लमानों के लिए सिवाए उसके वह कौन सा रास्ता खुला था कि जब एक शख़्स की इश्तिआल अंगेज़ी और तहरीक-ए--जंग और फ़ित्नापरदाज़ी और साज़िश क़तल की वजह से इस की ज़िंदगी को अपने लिए और देश के अमन के लिए ख़तरा पाते तो ख़ुद हिफ़ाज़ती के ख़्याल से अवसर पाकर उसे क़तल देते क्योंकि यह बहुत बेहतर है कि एक शरीर और मुफ़सिद आदमी क़तल हो जाए बजाय उसके कि बहुत से पुरअमन शहरियों की जान ख़तरे में पड़े और देश का अमन बर्बाद हो।

अल्लाह तआला भी यही फ़रमाता है कि फ़ित्ना क़तल से बड़ा है। बहरहाल इस अनुबंध की दृष्टि से जो हिजरत के बाद मुस्लमानों और यहूद के मध्य हुआ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को एक मामूली शहरी की हैसियत हासिल नहीं थी बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस लोकतांत्रिक सलतनत के सदर क़रार पाए थे जो मदीने में क़ायम हुई थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह इख़्तेयार दिया गया था कि समस्त झगड़ों और राजनैतिक मामलो में जो फ़ैसला मुनासिब ख़्याल करें फ़रमाएं।

अतः यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने देश के अमन के मुफ़ाद में काब की फ़ित्नापरदाज़ी की वजह से उसे क़तल करने के योग्य क़रार दिया तो यह कोई ऐसी बात नहीं थी इसलिए तेराह सौ साल बाद इस्लाम पर एतराज़ करने वालों का एतराज़ जो के orientalists करते हैं, मुस्तश्रिक़ीन करते हैं यह बूदा है क्योंकि उस वक़्त तो यहूदियों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बात सुनकर इस पर कोई एतराज़ नहीं किया था।

(उद्धृत सीरत ख़ातम नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 466 से 472)

इसी अरसा में हज़रत हफ़सा बिंत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की दूसरी शादी भी हुई। हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी थीं और उनका आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से शादी के बारे में जो वर्णन मिलता है इस की तफ़सील यूं है कि हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा के पति जंग बदर में शरीक हुए और जंग से वापसी पर बीमार हो कर इंतेक़ाल कर गए तो बाद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ शादी की।

इस की तफ़सील बुख़ारी में यूं दर्ज है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि जब हज़रत हफ़सा बिंत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुनयस् बिन हुजाफ़ह सहमी से विधवा हुईं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से थे और बदर में शरीक थे। मदीना में उन्होंने वफ़ात पाई तो रिवायत में वर्णन हुआ है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैं हज़रत उस्मान बिन अफ़्फान रज़ियल्लाहु अन्हो से मिला। उनके पास हफ़सा का वर्णन किया और कहा कि यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हो चाहें तो हफ़सा बिंत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का निकाह आप रज़ियल्लाहु अन्हो से कर दूं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा मैं अपने इस मुआमले पर ग़ौर करूँगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं इसलिए मैं कई रोज़ तक ठहरा रहा। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कुछ दिनों के बाद कहा कि मुझे यही मुनासिब मालूम होता है कि मैं इन दिनों शादी न करूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे फिर मैं हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से मिला कि यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हो चाहें तो मैं हफ़सा बिंत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का निकाह आप रज़ियल्लाहु अन्हो से कर दूं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ामोश हो गए और मुझे कोई जवाब न दिया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की निसबत मैंने उनसे ज़्यादा महसूस किया अर्थात एहसास ज़्यादा हुआ कि उन्होंने भी इंकार कर दिया। कहते हैं फिर मैं कुछ दिन ठहरा रहा। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह का पैग़ाम भेजा और मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से उनका निकाह कर दिया। (सही अल् बुख़ारी किताब अल्मग़ाज़ी बाब, हदीस 4005)

सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में इस वाक़िया को यूं लिखा है कि"हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हा की एक साहबज़ादी थीं जिनका नाम हफ़सा था। वह ख़ुनेस बिन हुजाफ़ा के अक़द में थीं जो एक मुख़लिस सहाबी थे और जंग-ए-बदर में शरीक हुए थे। बदर के बाद मदीना वापस आने पर ख़ुनेस बीमार हो गए और इस बीमारी से सेहतमदन न हो सके। उनकी वफ़ात के कुछ अरसा बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को हफ़सा के निकाह सानी का फ़िक्र दामन-गीर हुआ। इस वक़्त हफ़सा की उम्र बीस साल से ऊपर थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपनी फ़ित्रती सादगी में ख़ुद उस्मान बिन अफ़्फ़ान से मिलकर उनसे वर्णन किया कि मेरी लड़की हफ़सा अब बेवा है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो यदि पसंद करें तो उसके साथ शादी कर लें परंतु हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने टाल दिया। इस के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से वर्णन किया लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी ख़ामोशी इख़्तेयार की और कोई जवाब नहीं दिया। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हा को बहुत मलाल हुआ और उन्होंने इसी मलाल की हालत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सारी सरगुज़श्त अर्ज़ कर दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया।

उमर कुछ फ़िक्र न करो। ख़ुदा को मंज़ूर हुआ तो हफ़सा को उस्मान-ओ-अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की निसबत बेहतर पति मिल जाएगा और उस्मान को हफ़सा की निसबत बेहतर बीवी मिलेगी।

यह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसलिए फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हफ़सा के साथ शादी कर लेने और अपनी लड़की उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ ब्याह कर देने का इरादा कर चुके थे जिससे हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो दोनों को इत्तिला थी और इसी लिए उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तजवीज़ को टाल दिया था। इस के कुछ अरसा बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से अपनी साहबज़ादी उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी दी .. और इस के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद अपनी तरफ़ से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को हफ़सा के लिए पैग़ाम भेजा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को इस से बढ़कर और क्या चाहिए था।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 4-18 January 2024 Issue No. 1-3

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

उन्होंने निहायत ख़ुशी से इस रिश्ता को क़बूल किया और शाबान ३ हमें हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के निकाह में आकर हर्म नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में दाख़िल हो गईं। जब यह रिश्ता हो गया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि शायद आप रज़ियल्लाहु अन्हो के दिल में मेरी तरफ़ से कोई मलाल हो। बात यह है कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरादे से इत्तिला थी लेकिन मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकी इजाज़त के बग़ैर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के राज़ को ज़ाहिर नहीं कर सकता था। हाँ यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यहइ रादा न होता तो मैं बड़ी ख़ुशी से हफ़सा से शादी लेता।

हफ़सा के निकाह में एक तो यह विशेष उद्देश्य था कि वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की साहबज़ादी थीं जो गोया हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बाद समस्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में अफ़ज़ल तरीन समझे जाते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विशेष प्यारों में से थे। अतः आपस के ताल्लुक़ात को ज़्यादा मज़बूत करने और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हा और हफ़सा के इस सदमा की तलाफ़ी करने के वास्ते जो ख़ुनेस बिन हुज़े फ़ा की बेवक़त मौत से उनको पहुंचा था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुनासिब समझा कि हफ़सा से ख़ुद शादी फ़र्मा लें और दूसरी आम मस्लिहत यह मद्द-ए-नज़र थी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जितनी ज़्यादा बीवियां होंगी उतना ही औरतों में जो बनीनौ इन्सान का आधा हिस्सा बल्कि कुछ जिहात से आधाज बेहतर हिस्सा हैं दावत व तबलीग़ और तालीम-ओ-तर्बीयत का काम ज़्यादा वसीअ पैमाने पर और ज़्यादा आसानी और ज़्यादा ख़ूबी के साथ हो सकेगा।

(सीरत ख़ातम नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 477-478)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो मज़ीद फ़रमाते हैं कि "हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु शादी के वक़्त क़रीबन इक्कीस वर्ष थी और इस कारण से उसके कि हज़रत आयश रज़ियल्लाहु अन्हा के बाद वे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से एक अफ़ज़ल तरीन शख़्स की साहबज़ादी थीं।

अज़्वाज-ए-मुतह्हरात (पवित्र पत्नियों) में उनका एक विशेष स्थान समझा जाता है

और हज़रत आयश रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ भी उनका बहुत जोड़ था और सिवाए कभी-कभार की कशमकश के जो ऐसे रिश्ता में हो जाया करती है वे दोनों आपस में बहुत मुहब्बत के साथ रहती थीं। हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा लिखना पढ़ना जानती थीं। इसलिए हदीस में एक रिवायत आती है कि उन्होंने एक सहाबी औरत शिफ़ा बिंत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो से लिखना सीखा था। उनकी वफ़ात 45 हिजरी में हुई जबकि उनकी उम्र कमोबेश तरेसठ वर्ष की थी।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए पृष्ठ 480)

फिर इसी दौरान में हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हो की पैदाइश का वाक़िया भी हुआ। हज़रत इमाम हसन बिन अली बिन अबू तालिब आधे रमज़ान तीन हिज्री को पैदा हुए। कुछ लोग कहते हैं कि उनकी विलादत शाबान 3 हिज्री में हुई। कुछ कहते हैं ग़ज़व-ए-अहद के एक साल बाद हुई और कुछ कहते हैं दो साल बाद हुई। शरह बुख़ारी अल्लामा इब्ने हिज्र असकलानी कहते हैं कि पहली राय ज़्यादा दरुस्त है और मुहकम है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनका नाम हरब रखा था लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे बदल कर हसन कर दिया। जन्म के सातवें दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनका अक़ीक़ा किया और उनके बाल मुंडवाए और हुक्म दिया कि उनके बालों के हमवज़न चांदी ख़ैरात की जाए। उम्म-ए-फ़ज़ल ने एक मर्तबा अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मैंने ख़ाब में देखा है कि गोया एक अंग आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मेरे घर में है या कहा मेरे कमरे में है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुमने अच्छा ख़ाब देखा है। फ़ातिमा से एक बच्चा पैदा होगा तुम उस की देख-भाल करोगी और तुम उसको कुसम के साथ दूध पिलाओंगी। उम्मे फ़ज़ल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो की पत्नी थीं और कुसमान के बेटे का नाम था। इसलिए हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हो पैदा हुए और उम्मे फ़ज़ल ने उनको कुसमक के साथ पिलाया।

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हो से अर्ज़ किया गया कि आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुछ बातें याद हैं तो वर्णन कीजिए। उन्होंने कहा मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक बात याद है। मैंने एक मर्तबा सदक़े की ख़जूरों में से एक खजूर ले कर अपने मुँह में रख ली तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस को मेरे मुँह से निकाल दिया इस हाल में कि इस में मेरा लुआब मिल चुका था और उसको सदक़े की ख़जूरों में मिला दिया। किसी ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! एक खजूर की क्या बात है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हमारे लिए अर्थात ऑले मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए सदक़ा हलाल नहीं है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हो से ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुशाबेह कोई न था। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक मर्तबा हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने शाने पर सवार किए हुए थे। किसी ने कहा कि हे साहबज़ादे तुम कैसी अच्छी सवारी पर सवार हो। तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह सवार भी तो अच्छा है। उनको अपने नवासे से बड़ा प्यार था।

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि आप हसन बिन अली को अपने शाने पर सवार किए हुए थे और यह फ़रमाते जाते थे कि हे अल्लाह मैं इस को दोस्त रखता हूँ तू भी उसे दोस्त रख। कुछ रिवायात में इस बात का भी वर्णन आता है कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात ज़हर से हुई थी।

(अल् असाबा भाग प्रथम पृष्ठ 492 अल-हसन बिन अली, दारुल फ़िकर बेरूत 2001 ई.)

(ओसोदुल गाबा भाग 2 पृष्ठ 13 से 16 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

बहरहाल हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हो की विलादत का वर्णन करते हुए वर्णन किया है कि "दो हिज्री के वाक़ियात में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हो के निकाह का वर्णन गुज़र चुका है। उनके हाँ रमज़ान तीन हिज्री में अर्थात निकाह के क़रीबन दस माह बाद एक बच्चा पैदा हुआ जिसका नाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हसन रखा। यह वही हसन हैं जो बाद में मुस्लमानों में इमाम हसन के नाम से जाने जाते हैं। हसन रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी शक्ल व सूरत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से बहुत मिलते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जिस तरह अपनी औलाद हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हो से बहुत मुहब्बत थी इसी तरह हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा की औलाद से भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को विशेष मुहब्बत थी। कई दफ़ा फ़रमाते थे ख़ुदाया! मुझे इन बच्चों से मुहब्बत है तू भी उनसे मुहब्बत कर और उनसे मुहब्बत करने वालों से मुहब्बत कर

कई दफ़ा ऐसा होता था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नमाज़ में होते तो हसन रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से लिपट जाते। रुकुअ में होते तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की टांगों में से रास्ता बना कर निकल जाते। बाज़-औक़ात जब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो उन्हें रोकते तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा को मना फ़र्मा देते कि रोको नहीं। दरअसल चूँकि उनका लिपटना आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तवज्जा को मुंतशिर नहीं करता था इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनकी मासूम मुहब्बत के तिफ़लाना मुज़ाहरा में रोक नहीं होना चाहते थे। इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हो के मुताल्लिक़ एक दफ़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरा यह बच्चा सय्यद अर्थात सरदार है और एक वक़्त आएगा कि ख़ुदा उसके ज़रीया से मुस्लमानों के दो गिरोहों में सुलह

शेष पृष्ठ 7 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad